सांध्य दैनिक

नई दृष्टिबिंदु

सच की शक्ति, जनता की दृष्टि

PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

सु-विचार

*" दुनिया की सबसे महंगी चीजें हैं विश्वास,
कमाने में सालों लग सकते हैं
और गंवाने में बस कुल पल ...!!*

अज्ञात...

वर्ष-01 अंक-220 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, शनिवार 29 अगस्त 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य -2

Zee Group के सुभाष चंद्रा को NCLT से बड़ी राहत : 22,000 करोड़ के दावे पर चुकाने होंगे सिर्फ 6.5 करोड़

नई दृष्टिबिंदु / नईदिल्ली

Zee और Essel Group के संस्थापक सुभाष चंद्रा के पर्सनल इनसॉल्वेंसी मामले में NCLT ने उनके रीपेमेंट प्लान को मंजूरी दे दी है। इसके तहत बैंकों के 22,000 करोड़ के स्वीकृत दावों के बदले उन्हें सिर्फ 6.5 करोड़ चुकाने होंगे।

170 करोड़ से 22 हजार करोड़ तक कैसे पहुंचा मामला?

इस मामले की शुरूआत 2016 में हुई थी जब Essel Group की कंपनी Vivek Infra Private Limited ने Indiabulls Housing Finance से 170 करोड़ का लोन लिया था, जिसके लिए सुभाष चंद्रा पर्सनल गारंटर बने थे। 2018 में उन्होंने गारंटी की सीमा बढ़ाकर 726 करोड़ कर दी। कंपनी के डिफॉल्ट करने पर Indiabulls ने IBC की धारा 95 के तहत NCLT में याचिका दायर की। याचिका स्वीकार होने के बाद रेजोल्यूशन प्रोफेशनल ने अन्य लेनदारों से भी दावे मंगाए, जिसके बाद कुल स्वीकृत दावे 22,000 करोड़ तक पहुंच गए।

99.97% हेयरकट:

- कुल दावे: 22,000 करोड़
- रीपेमेंट राशि: 6.5 करोड़ (6.25 करोड़ + 25 लाख खर्च)
- रिकवरी: हर 100 पर सिर्फ 3 पैसे
- प्लान के पक्ष में वोट: 80.81%

LIC Housing Finance, Axis Bank, Canara Bank, HDFC, RBL और Union Bank ने इस प्लान का विरोध किया। LIC का अकेले 132 करोड़ का दावा था, जिसके बदले उसे 38 लाख मिलेंगे। NCLT ने कहा कि यह लेनदारों का कमर्शियल फैसला है और सुभाष चंद्रा की व्यक्तिगत संपत्ति का मूल्य इससे भी कम है, इसलिए 80% से ज्यादा वोट से पास प्लान को खारिज नहीं किया जा सकता। इस फैसले पर कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने तंज कसते हुए कहा - "यह हेयरकट नहीं, मुंडन है।" वहीं विजय माल्या ने पोस्ट कर कहा, "मेरे दोस्त सुभाष को बहुत-बहुत बधाई।"

महादेव बुक बेटिंग नेटवर्क पर DGGI की सबसे बड़ी कार्रवाई

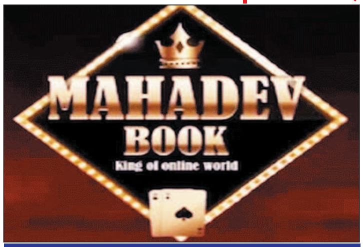

40 हजार करोड़ से ज्यादा की GST देनदारी का नोटिस

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

ऑनलाइन बेटिंग के चर्चित महादेव बुक नेटवर्क पर DGGI रायपुर जोनल यूनिट ने अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाई की है। विभाग ने नेटवर्क के प्रमोटरों, पैनल ऑपरेटरों सहित 97 लोगों को दो शो-कॉज नोटिस जारी कर 40,603 करोड़ रुपए की GST देनदारी प्रस्तावित की है।

DGGI की जांच के मुताबिक 1 अप्रैल 2020 से 31 मार्च 2024 तक नेटवर्क में कुल 1,45,010.77 करोड़ रुपए का करयोग्य लेन-देन हुआ है। जांच के दायरे में महादेव बुक के मुख्य प्रमोटर सौरभ चंद्राकर और रवि उप्पल समेत पैनल ऑपरेटर और सहयोगी शामिल हैं। पहला नोटिस 66 लोगों को और दूसरा 31 लोगों को जारी किया गया है।

रोज 99 करोड़ का लेन-देन, 2000 पैनलों की जांच

जांच में सामने आया है कि महादेव बुक नेटवर्क से करीब 2000 बेटिंग पैनल जुड़े हैं। हर पैनल पर रोज लाखों रुपए जमा होते थे और पूरे नेटवर्क में प्रतिदिन करीब 99 करोड़ रुपए का लेन-देन होता था। यह रकम बैंक खातों, थर्ड पार्टी खातों और अन्य माध्यमों से घुमाई जाती थी।

सूत्रों का कहना है कि इतने बड़े कारोबार के बावजूद GST पंजीयन नहीं लिया गया और न ही कर जमा किया गया। नोटिस पाने वालों को 30 दिन में जवाब देने को कहा गया है। विभाग ने स्पष्ट किया है कि यह अभी प्रस्तावित देनदारी है, अंतिम फैसला कानूनी प्रक्रिया पूरी होने के बाद होगा।

बीएसपी स्क्रैप चोरी : अब जीएसटी विभाग खंगालेगा रिकॉर्ड, फर्म के बिलों का होगा सत्यापन

भिलाई। भिलाई स्टील प्लांट से 250 टन लौह स्क्रैप चोरी के मामले में पुलिस के बाद अब जीएसटी विभाग ने भी जांच शुरू कर दी है। विभाग आरोपी फर्मों के जीएसटी बिक्री बिलों और ई-वे बिलों का सत्यापन करेगा। जीएसटी विभाग बीएसपी के एसएमएस-3 से स्क्रैप की निकासी, बिक्री और परिवहन से जुड़े सभी दस्तावेजों की गहन जांच करेगा। विभाग ने पुलिस से जब्त दस्तावेज हासिल कर लिए हैं और बीएसपी प्रबंधन से भी चरणबद्ध तरीके से रिकॉर्ड लिया जा रहा है।

गौरतलब है कि 26 मई को ग्राम अकलोरडीह स्थित 'एके ट्रेडर्स' में छापेमारी कर पुलिस ने 250 टन बीएसपी का स्क्रैप जब्त किया था। इस कार्रवाई में स्क्रैप सहित कुल 3 .22 करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त की गई थी और 17 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया था। पुलिस इस मामले में 900 पन्नों का चालान कोर्ट में पेश कर चुकी है। वहीं भिलाई-3 थाना पुलिस ने भी जांच तेज कर दी है। पुलिस ने मुख्य आरोपी की फर्म के जीएसटी बिल, टैक्स, इनवॉयस नंबर और क्रेता-विक्रेता सहित आठ बिंदुओं पर विस्तृत जानकारी के लिए संयुक्त आयुक्त, राज्यकर दुर्ग को पत्र लिखा है।

सिटी कोतवाली चौक में दो पक्षों में हुआ पथराव तनाव के बाद पुलिस ने छोड़े आंसू गैस के गोले

नई दृष्टिबिंदु / बिलासपुर

शहर के सिटी कोतवाली चौक में आज दो पक्षों के बीच विवाद के बाद पथराव हो गया, जिससे इलाके में तनाव फैल गया। जानकारी के अनुसार हिंदू संगठन से जुड़े रामसिंह ठाकुर और कुछ मुस्लिम युवकों के बीच किसी बात को लेकर कहासुनी हुई थी। देखते ही देखते विवाद बढ़ गया और दोनों पक्ष आमने-सामने आ गए। इसके बाद दोनों ओर से ईंट-पत्थर चलने लगे। घटना के बाद चौक पर बड़ी संख्या में भीड़ जमा हो गई। स्थिति बिगड़ती देख पुलिस मौके पर पहुंची। भीड़ को तितर-बितर करने के लिए पुलिस को पटाखेनुमा बम फोड़ने पड़े और आंसू गैस के गोले छोड़ने पड़े। कुछ देर तक पथराव जारी रहा। हालात को देखते हुए कोतवाली चौक और आसपास के इलाके में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात कर दिया गया है।

विवाद की सूचना पर विधायक सुशांत शुक्ला भी मौके पर पहुंचे और हिंदू संगठन से जुड़े लोगों को समझा-बुझाकर शांत कराने की कोशिश की। फिलहाल इलाके में सुरक्षा कड़ी कर दी गई है। पुलिस पूरे घटनाक्रम की जांच कर रही है।

बिलासपुर में सिटी कोतवाली क्षेत्र में धारा 163 लागू, हथियारों पर प्रतिबंध

सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र में कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए जिला प्रशासन ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 163 के तहत प्रतिबंधात्मक आदेश लागू कर दिया है। कलेक्टर संजय अग्रवाल ने 28 अगस्त को यह आदेश जारी किया, जो आगामी आदेश तक प्रभावी रहेगा। पुलिस रिपोर्ट के मुताबिक 28 अगस्त की रात दो पक्षों के बीच विवाद के बाद मारपीट हुई और भीड़ जुटने से स्थिति बिगड़ने की आशंका थी। इसे देखते हुए प्रशासन ने एहतियातन सख्ती बढ़ा दी।

आदेश के तहत सार्वजनिक स्थानों पर तलवार, फरसा, भाला, लाठी, चाकू, छुरा, कुल्हाड़ी, गुप्ती, त्रिशूल सहित किसी भी तरह के हथियार लेकर घूमने पर रोक रहेगी। ड्यूटी पर तैनात शासकीय कर्मचारियों को छूट रहेगी। साथ ही सभा, रैली, जुलूस, प्रदर्शन, धरना पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया है। चार या अधिक लोगों के एक स्थान पर जुटने पर रोक रहेगी। किसी भी आयोजन के लिए एसडीएम बिलासपुर से पूर्व अनुमति लेना अनिवार्य होगा। आदेश में कहा गया है कि सरकारी या निजी संपत्ति में तोड़फोड़, रास्ता रोकने और भय का माहौल बनाने वालों के खिलाफ BNS की धारा 188 और BNSS की धारा 223 के तहत कार्रवाई की जाएगी।

बिलासपुर में दो वारदातें : एक में भाई ने भाई को सब्बल से मारा, दूसरे में शराब भट्टी में हत्या

नई दृष्टिबिंदु / बिलासपुर

पहली घटना - हरदीकला टोना में भाई की हत्या : ग्राम हरदीकला टोना में आपसी विवाद में एक भाई ने दूसरे भाई की हत्या कर दी। मृतक का नाम सुभाष कुर्रे और आरोपी का नाम सुदर्शन कुर्रे बताया जा रहा है।

जानकारी के अनुसार आरोपी सुदर्शन अपने भांजे के साथ गाली-गलौज और मारपीट कर रहा था। बड़े मामा सुभाष ने उसे रोकने की कोशिश की। इसी बात को लेकर विवाद बढ़ गया और सुदर्शन ने सब्बल से हमला कर सुभाष की हत्या कर दी। बताया जा रहा है कि घटना के समय दोनों नशे में थे। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

दूसरी घटना - सिरगिट्टी शराब भट्टी में हत्या : दूसरी घटना थाना सिरगिट्टी क्षेत्र के हरदी शराब भट्टी की है। शराब खरीदने के लिए लाइन में लगने के दौरान राकेश प्रजापति और एक अन्य व्यक्ति के बीच बहस हो गई। विवाद बढ़ने पर आरोपी ने राकेश पर धारदार हथियार से हमला कर दिया और फरार हो गया।

सूचना पर सिरगिट्टी पुलिस मौके पर पहुंची और घायल राकेश को अस्पताल भेजा, जहां रास्ते में ही उसकी मौत हो गई। प्रारंभिक पूछताछ और सीसीटीवी फुटेज से लाइन में विवाद की बात सामने आई है। थाना सिरगिट्टी में अपराध पंजीबद्ध कर आरोपी की तलाश के लिए टीम रवाना की गई है।

तेज रफ्तार ट्रक ने तीन जिंदगियां छीनी बाइक को घसीटता रहा वाहन

बिलासपुर में शनिवार सुबह तेज रफ्तार ट्रक ने बाइक सवार 3 युवकों को टक्कर मार दी। तीनों युवकों की मौके पर ही मौत हो गई। टक्कर के बाद ट्रक बाइक को 30 फीट तक घसीटता रहा। बाइक बुरी तरह डैमेज हो गई और तीनों के शव सड़क पर बिखर गए। हादसे के बाद ड्राइवर ट्रक समेत मौके से फरार हो गया। घटना तखतपुर थाना क्षेत्र की जूनापारा पुलिस चौकी के पास की है। मृतकों की पहचान नहीं हो पाई है। पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए अस्पताल भिजवा दिया है। इसके अलावा आसपास लगे सीसी टीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं। पुलिस का कहना है कि जल्द ही आरोपी ड्राइवर को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, तीनों युवक एक ही बाइक पर सवार होकर जा रहे थे। जूनापारा के पास सामने से आ रहे तेज रफ्तार ट्रक ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर के बाद ट्रक बाइक को कुछ दूर तक घसीटता हुआ ले गया। हादसे में तीनों युवकों को गंभीर चोटें आईं और उनकी मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद मौके पर राहगीरों और ग्रामीणों की भीड़ जुट गई। हादसे के कारण कुछ समय के लिए सड़क पर आवाजाही बंद रही। सूचना मिलते ही जूनापारा चौकी पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति को संभाला। पुलिस ने भीड़ हटाकर यातायात व्यवस्था बहाल कराई। पुलिस ने तीनों शवों को कब्जे में लेकर पंचनामा कार्रवाई की और पोस्टमॉर्टम के लिए मचुर्री भेज दिया। मृतकों के पास तत्काल पहचान से संबंधित दस्तावेज नहीं मिले हैं। पुलिस आसपास के गांवों में संपर्क कर मृतकों की पहचान कराने का प्रयास कर रही है। पुलिस ने अज्ञात ट्रक चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। फरार ट्रक और चालक की तलाश के लिए मुख्य मार्गों और आसपास के ढाबों पर लगे सीसी टीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है।

एक तस्वीर जो 242 विधायकों को आईना दिखा गई : PK फैक्टर

आम तौर पर बिहार में विधायक -सांसद रोना रोते हैं कि डीएमएसपी फोन नहीं उठाते

विशेष संवाददाता संदीप सिंह / पटना

बिहार विधानसभा में 243 विधायक हैं। उनमें से एक हैं प्रशांत किशोर, जो अभी-अभी बांकीपुर से जीते हैं। शपथ लिए 15 दिन भी नहीं हुए और उनकी एक तस्वीर ने बाकी 242 विधायकों को सोचने पर मजबूर कर दिया है।

आमतौर पर बिहार में विधायक-सांसद यही रोना रोते हैं कि DM-SP उनका फोन नहीं उठाते। सरकार को इसके लिए बार-बार प्रोटोकॉल का आदेश निकालना पड़ता है। और अगर फोन उठ भी जाए तो कई नेता अफसरों को ही 'सर-सर' कहते सुने जाते हैं। लेकिन कल शाम आई तस्वीर में कहानी उल्टी है। विधायक प्रशांत किशोर एक टेबल पर हैं और सामने बैठे हैं बिहार के सबसे बड़े अफसर - मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत और DGP विनय कुमार। साथ में

ADG और पटना नगर निगम के अधिकारी भी।

बताया जा रहा है कि जीत के बाद PK बांकीपुर की जनता को थैंक्यू कहने निकले थे। लोगों ने समस्याएं बताईं, उन्होंने नोट किया और फिर एक साथ सभी संबंधित शीर्ष अधिकारियों को एक टेबल पर बुलाकर समाधान की बात की। बिहार में ऐसा उदाहरण दुर्लभ है जहां एक विधायक के कहने पर चीफ सेक्रेटरी से लेकर म्युनिसिपल अफसर तक एक साथ बैठें।

पढ़ा-लिखा होना कैसे बनता है ताकत?

इस तस्वीर के पीछे PK का पढ़ा-लिखा होना और सिस्टम की समझ बताया जा रहा है। इसका एक उदाहरण 2025 का BPSC आंदोलन भी है। गांधी मैदान से भोर में गिरफ्तार हुए प्रशांत किशोर को कोर्ट ने सशर्त जमानत दी थी, लेकिन उन्होंने शर्त मानने से इनकार कर दिया और जेल जाने पर अड़ गए। पुलिस उन्हें फतुहा से नौबतपुर तक लेकर घूमती रही। आखिरकार कोर्ट को अपना ही आदेश सुधारना पड़ा और उन्हें बिना शर्त जमानत देनी पड़ी। राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि यह तस्वीर सिर्फ एक बैठक नहीं, बल्कि जनप्रतिनिधि के कद को लेकर एक नया मानक है।

रायपुर विधानसभा थाने में करंट से युवक की मौत, बचाने गए सिपाही भी झुलसे

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

राजधानी के विधानसभा थाने में आज एक दर्दनाक हादसा हो गया। थाने के बाहर लगे वाटर कूलर में करंट आने से एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि उसे बचाने पहुंचा पुलिस जवान भी करंट की चपेट में आकर घायल हो गया। मृतक की पहचान रमेश ठाकुर (32), निवासी बिल्हा, बिलासपुर के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि रमेश किसी काम से विधानसभा थाने आया था, तभी पानी पीने के दौरान वाटर कूलर से उसे जोरदार करंट लगा।

उसे बचाने के लिए थाना में पदस्थ सिपाही गणेश दौड़ा, तो वह भी करंट की चपेट में आ गया। घायल जवान को तत्काल जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस और उरएइ के अधिकारी मौके पर पहुंच गए हैं। विधानसभा थाना पुलिस मामले की जांच कर रही है।

रक्षाबंधन पर मंत्री यादव की कलाई पर सजी राखियां, बहनों ने लिया सेवा और विकास का संकल्प

रक्षाबंधन केवल एक पर्व नहीं, बल्कि भाई-बहन के बीच प्रेम, विश्वास और जिम्मेदारी का पवित्र बंधन, शहर के विकास और जनसेवा के कार्यों में निरंतर सक्रिय रहने का दिया आशीर्वाद

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

रक्षाबंधन के पावन पर्व पर दुर्ग स्थित सेवा सदन कार्यालय में भाई-बहन के स्नेह, विश्वास और आत्मीयता एवं उत्साहपूर्ण वातावरण देखने को मिला। दुर्ग विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न वार्डों से बड़ी संख्या में बहनें अपने विधायक एवं कैबिनेट मंत्री गजेन्द्र यादव को राखी बांधने पहुंचीं। बहनों ने पारंपरिक रीति-रिवाज के साथ आरती उतारकर मंगल तिलक किया और उनकी कलाई पर रक्षा सूत्र बांधकर सुखी, स्वस्थ एवं दीघार्यु जीवन की कामना किये।

रक्षाबंधन के अवसर पर सुबह से ही सेवा सदन में बहनों के पहुंचने का सिलसिला शुरू हो गया था। हजारों की संख्या में बहनों ने अपने विधायक भाई गजेन्द्र यादव को राखी बांधी और मिठाई खिलाकर शहर के विकास एवं जनसेवा के कार्यों में निरंतर सक्रिय रहने का आशीर्वाद दिये। बहनों के स्नेह और उत्साह से सेवा सदन का पूरा परिसर रक्षाबंधन के रंग में रंगा नजर आया। बड़ी संख्या में राखियां बांधे जाने के कारण मंत्री गजेन्द्र यादव की दोनों कलाइयां राखियों से भर गई।

इस अवसर पर मंत्री गजेन्द्र यादव ने बहनों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि रक्षाबंधन केवल एक पर्व नहीं, बल्कि भाई-बहन के बीच प्रेम, विश्वास और जिम्मेदारी का पवित्र बंधन है। मेरी कलाई पर बहनों द्वारा बांधी गई प्रत्येक राखी मेरे लिए स्नेह के साथ-साथ एक जिम्मेदारी और सेवा का संकल्प भी है। आप बहनों का यह प्रेम, आशीर्वाद और विश्वास ही मेरी सबसे बड़ी ताकत, प्रेरणा और धरोहर है। मैं सदैव बहनों के सम्मान, सुरक्षा और हितों के लिए समर्पित भाव से कार्य करता रहूंगा।

उन्होंने कहा कि दुर्ग विधानसभा की बहनों ने जिस आत्मीयता के साथ उन्हें अपना भाई मानकर राखी बांधी है, वह उनके लिए अत्यंत भावुक और गौरव का क्षण है। बहनों के इस विश्वास को वे सदैव अपने जनसेवा के दायित्व के साथ जोड़कर आगे बढ़ेंगे और दुर्ग शहर के विकास को नई गति देने के लिए निरंतर प्रयासरत रहेंगे। दुर्ग विधानसभा के लगभग सभी वार्डों से महिलाएं सेवा सदन पहुंचीं। बहनों ने कहा कि विधायक गजेन्द्र यादव को राखी बांधना उनके लिए केवल एक पर्व की परंपरा नहीं, बल्कि भाई के प्रति अपने स्नेह और विश्वास को व्यक्त करने का अवसर है। उन्होंने मंगल तिलक कर अपने विधायक भाई की लंबी आयु एवं निरंतर जनसेवा की कामना की।

बहनों ने कहा कि गजेन्द्र यादव विधायक बनने के बाद लगातार दुर्ग शहर के विकास, महिलाओं के सम्मान, सुरक्षा और सुविधाओं को लेकर सक्रियता से कार्य कर रहे हैं। जनसमस्याओं को सुनना और उनके समाधान के लिए प्रयास करना उनकी कार्यशैली का हिस्सा है। रक्षाबंधन पर राखी बांधकर बहनों ने उनसे इसी तरह निरंतर जनसेवा करते रहने और दुर्ग को विकास की नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने का वचन लिया।

खास खबर

केंद्रीय जेल में राखी बांधने पहुंचे 4 हजार परिजनों के बीच दुर्ग पुलिस ने चलाया साइबर जागृति अभियान

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

रक्षाबंधन के पावन अवसर पर केंद्रीय जेल परिसर दुर्ग में बंदियों से मिलने और उन्हें राखी बांधने पहुंचे लगभग 4,000 परिजनों की सुरक्षा व्यवस्था के साथ दुर्ग पुलिस ने व्यापक साइबर जागरूकता अभियान चलाया। पुलिस अधिकारियों एवं साइबर टीम ने उपस्थित लोगों को ऑनलाइन ठगी और डिजिटल अपराधों से बचाव के उपाय बताए।

अभियान के दौरान पुलिस टीम ने परिजनों को फर्जी कॉल एवं संदेश, संदिग्ध लिंक, ओटीपी के जरिए होने वाली ठगी तथा डिजिटल माध्यम से होने वाले साइबर अपराधों के संबंध में सरल भाषा में जानकारी दी। लोगों को बताया गया कि किसी अनजान व्यक्ति के साथ ओटीपी, बैंक खाते से संबंधित गोपनीय जानकारी, पासवर्ड अथवा अन्य संवेदनशील डिजिटल जानकारी साझा न करें। पुलिस ने उपस्थित लोगों को संदिग्ध लिंक पर क्लिक करने से बचने और किसी भी प्रकार की ऑनलाइन ठगी होने पर बिना देरी किए पुलिस को सूचना देने के लिए जागरूक किया। साथ ही परिजनों को स्वयं साइबर अपराधों के प्रति सतर्क रहने और अपने परिवार तथा आसपास के लोगों को भी जागरूक करने के लिए प्रेरित किया गया।

रक्षाबंधन के अवसर पर बड़ी संख्या में पहुंचे परिजनों के बीच चलाए गए इस अभियान का उद्देश्य त्योहार के दौरान सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने के साथ आम नागरिकों को साइबर अपराधों के प्रति जागरूक करना रहा। अभियान में शामिल परिजनों ने साइबर अपराधों से बचाव संबंधी जानकारी को उपयोगी बताया और अन्य लोगों तक भी जागरूकता पहुंचाने की बात कही। अभियान में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शहर शोभराज अग्रवाल, उप निरीक्षक संकल्प राय, साइबर टीम, थाना प्रभारी पद्मनाभपुर प्रमोद रुसिया, उप निरीक्षक चंद्रशेखर सोनी, प्रभारी अंजोरा सहित पुलिस स्टाफ की सक्रिय सहभागिता रही।

ईश्वर का शुक्र है, कोई जनहानि नहीं हुई : अरुण वोरा

दुर्ग। हादसे पर अपनी प्रतिक्रिया में दुर्ग के पूर्व विधायक एवं कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अरुण वोरा ने चिंता जताते हुए कहा कि यह घटना बेहद चिंताजनक है। उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद करते हुए कहा कि सबसे बड़ी राहत की बात यह है कि इस हादसे में किसी की जान नहीं गई और कोई घायल नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि वाहन का नुकसान निश्चित रूप से दुखद है, लेकिन किसी व्यक्ति को नुकसान न पहुंचना सबसे महत्वपूर्ण है। उन्होंने सभी की कुशलता के लिए ईश्वर का धन्यवाद किया।

महापौर की कार में आग की घटना गंभीर सुरक्षा में चूक का संकेत : डॉ. प्रतीक उमरे

दुर्ग। नगर निगम परिसर में महापौर अलका बाघमार की कार में अचानक आग लगने की घटना पर दुर्ग नगर निगम के पूर्व एल्डरमैन भाजपा नेता डॉ. प्रतीक उमरे ने गंभीर चिंता व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि निगम परिसर जैसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थान पर खड़ी कार में आग लगना केवल एक वाहन में हुई सामान्य घटना मानकर नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। इस घटना की विस्तृत जांच कर आग के वास्तविक कारणों का पता लगाया जाना आवश्यक है, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकी जा सके। डॉ. प्रतीक उमरे ने कहा कि वास्तविक कारण जांच पूरी होने के बाद ही स्पष्ट होगा। इसलिए घटना की तकनीकी जांच कराई जानी चाहिए तथा यह भी देखा जाना चाहिए कि वाहन की सर्विसिंग,वायरिंग, बैटरी और अन्य विद्युत उपकरणों की स्थिति कैसी थी या उनसे किसी प्रकार की छेड़छाड़ तो नहीं किया गया है।

खेल राष्ट्र निर्माण और युवाओं को सकारात्मक दिशा देने का सशक्त माध्यम-सांसद बघेल

आईआईटी भिलाई में हुआ खेलों इंडिया संवाद कार्यक्रम का आयोजन

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

राष्ट्रीय खेल दिवस प्रत्येक वर्ष 29 अगस्त को महान हॉकी खिलाड़ी एवं देश के गौरव मेजर ध्यानचंद जी की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। इस अवसर पर इस वर्ष राष्ट्रीय खेल दिवस आईआईटी भिलाई में ॡखेलों इंडिया संवादॡ खेल की बात पीएम मोदी के साथ कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से राष्ट्रव्यापी खेलो इंडिया संवाद को संबोधित करते हुए देशभर के युवाओं को सम्बोधित किया। उन्होंने खेलों के महत्व, खिलाड़ियों के प्रोत्साहन और राष्ट्र निर्माण में खेलों की भूमिका पर अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम दुर्ग सांसद विजय बघेल के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। इस दौरान एसडीएम महेश राजपूत, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भिलाई डायरेक्टर राजीव प्रकाश, यूथ आइकन सुयश पाण्डे, बास्केटबॉल खिलाड़ी रोहित शर्मा सहित बड़ी संख्या में युवा उपस्थित थे। राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष्य में मेरा युवा भारत द्वारा आयोजित इस विशेष कार्यक्रम का उद्देश्य देश के युवाओं को भारत की खेल यात्रा से जोड़ना, उनकी आकांक्षाओं को साझा करना और विकसित भारत के निर्माण में उनके विचारों का योगदान सुनिश्चित करना है।

इस अवसर पर सांसद विजय बघेल ने कहा कि खेल केवल शारीरिक क्षमता का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण और युवाओं को सकारात्मक दिशा देने का सशक्त माध्यम है। एक विशेष कार्यक्रम के दौरान पूर्व राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी ने मेजर ध्यानचंद के योगदान, अपने शुरूआती संघर्षों और खिलाड़ियों के प्रति प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निरंतर समर्थन का उल्लेख करते हुए खेलों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मेजर ध्यानचंद के जन्मदिवस को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है। मेजर ध्यानचंद ने अपनी प्रतिभा और देशभक्ति से भारत का गौरव बढ़ाया। सांसद श्री बघेल अपने पूराने दिनों को याद करते हुए बताया कि वे तीन बार राष्ट्रीय स्तर पर कबड्डी खेल चुके हैं। उन्होंने बताया कि उस समय खिलाड़ियों के लिए सुविधाएं बेहद सीमित थीं। प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए खिलाड़ियों को ट्रेनों के जनरल डिब्बों में, यहां तक कि टॉयलेट के पास चादर बिछाकर भी यात्रा करनी पड़ती थी। इसके बावजूद खिलाड़ियों में देश के लिए खेलने और बेहतर प्रदर्शन करने का जुनून बना रहता था।

उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा खिलाड़ियों को दिए जा रहे प्रोत्साहन की सराहना करते हुए कहा कि अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले खिलाड़ियों से प्रधानमंत्री स्वयं फोन पर बातचीत कर उनका हौसला बढ़ाते हैं। जीत के बाद बधाई देना और हार के बाद संवेदनशीलता के साथ खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाना उनकी कार्यशैली की विशेषता है। कार्यक्रम में अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर देश का प्रतिनिधित्व कर रहे भिलाई के युवा बास्केटबॉल खिलाड़ी रोहित शर्मा सहित अन्य होनहार खिलाड़ियों की उपलब्धियों की सराहना की। उन्होंने कहा कि आज देश अनेक आंतरिक और बाहरी चुनौतियों के बीच आगे बढ़ रहा है। ऐसे समय में खेल युवाओं को अनुशासन, आत्मविश्वास, टीम भावना और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी की सीख देता है।

कार्यक्रम के पश्चात युवा संवाद का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें खेल इकोसिस्टम में सुधार, 2036 ओलंपिक की तैयारी, युवा नेतृत्व का निर्माण विकसित भारत के लिए सशक्तिकरण, नशा मुक्त युवा अभियान विषयों पर चर्चा की गई। युवाओं से उनके सुझाव एवं विचार क्यूआर कोड के माध्यम से प्राप्त किए गए। यह पहल युवाओं को खेल, नेतृत्व, कौशल विकास एवं राष्ट्र निर्माण से जोड़ने के साथ-साथ भारत के विकसित एवं सशक्त भविष्य के निर्माण में उनकी सक्रिय भूमिका सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। युवाओं को माय भारत पोर्टल पर पंजीकृत करवाया गया एवं विकसित भारत यंग लीडर डायलॉग के तहत क्विज मे भाग दिलवाया गया और सभी युवाओं को माय भारत पोर्टल से जुड़ कर राष्ट्र निर्माण के लिए प्रेरित किया गया।

इस अवसर पर आईआईटी के डायरेक्टर राजीव प्रकाश ने भी अपने संबोधन में खेलों को बढ़ावा देने और युवा प्रतिभाओं को बेहतर अवसर उपलब्ध कराने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि क्षेत्र में खेल सुविधाओं के विस्तार और खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।

रक्षाबंधन पर्व पर स्नेह, विश्वास और अपनापन का उत्सव : विधायक चंद्राकर

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

रक्षाबंधन के पावन पर्व पर भाई-बहन के अटूट प्रेम, स्नेह और विश्वास की भावपूर्ण झलक देखने को मिली। दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर एवं उनके बड़े भाई अशोक चंद्राकर की बहनों ने उन्हें राखी बांधकर सुख-समृद्धि एवं दीघार्यु की कामना की। विधायक ललित चंद्राकर की बड़ी बहनों श्रीमती सरोज चंद्राकर एवं श्रीमती सुनंदा चंद्राकर ने भाई की कलाई पर रक्षासूत्र बांधा। इस दौरान परिवार में आत्मीयता और उल्लास का वातावरण रहा। विधायक ललित चंद्राकर ने बहनों को उपहार भेंट कर उनके सम्मान एवं रक्षा का संकल्प दोहराया।

इस अवसर पर विधायक ललित चंद्राकर ने कहा कि भाई-बहन का रिश्ता केवल एक रिश्ता नहीं, बल्कि बचपन की अनगिनत यादों, अपनापन और जीवनभर साथ निभाने वाले विश्वास का नाम है। राखी के पवित्र धागे के साथ बचपन की छोटी-छोटी नोकझोंक, रूठना-मनाना, साथ बिताए अनगिनत पल और सुख-दुःख में एक-दूसरे के साथ खड़े रहने का अटूट विश्वास फिर से जीवंत हो उठता है।

उन्होंने कहा कि समय भले ही बदल जाए, लेकिन भाई-बहन के रिश्ते में समाया स्नेह और अपनापन कभी कम नहीं होता। विधायक ने अपनी बहनों को रक्षाबंधन की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। विधायक ललित चंद्राकर ने क्षेत्रवासियों को भी रक्षाबंधन पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भाई-बहन का प्रेम, विश्वास और सौहार्द समाज में आपसी एकता एवं सद्भाव को मजबूत करता है। इस अवसर पर परिवारजन, शुभचिंतक एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे। पूरे वातावरण में रक्षाबंधन पर्व का उल्लास, प्रेम और आत्मीयता देखने को मिली।

सावन तीज क्वीन महोत्सव के पोस्टर का विमोचन, थीम होगी राधा रानी

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

सावन तीज क्वीन महोत्सव के पोस्टर का विमोचन पूर्व सांसद सुश्री सरोज पांडे ने किया। यह प्रतियोगिता शादीशुदा महिलाओं के लिए आयोजित की जा रही है। प्रतियोगिता को तीन वर्गों में बांटा गया है। प्रथम वर्ग जूनियर 21 से 35 वर्ष, द्वितीय वर्ग सीनियर 36 से 50 वर्ष और तृतीय वर्ग क्लासिक 50 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं के लिए रखा गया है। प्रतियोगिता में तीन राउंड होंगे। पहले राउंड में रैंप वॉक, दूसरे में परिचय एवं प्रश्नोत्तरी और तीसरे में टैलेंट राउंड होगा। प्रतियोगिता की थीम राधा रानी रखी गई है और प्रतिभागियों को प्रॉपर ड्रेस में आना होगा।

पोस्टर विमोचन कार्यक्रम में समाजसेवी कन्हैया सोनी, डॉ. सविता, ललित मोहन, पिया भौमिक, नम्रता सेन, जिया, फरिश्ता, पलाश घोष, अजय पांडे सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे। प्रतियोगिता के दौरान पूजा थाली सजाओ, रंगोली, दुल्हन सजाओ, मेहंदी और बंपर हाउजी जैसे कार्यक्रम भी आयोजित होंगे। प्रतियोगिता में रजिस्ट्रेशन निशुल्क रखा गया है। सभी प्रतिभागियों और दर्शकों को पर्यावरण संरक्षण के संदेश के साथ निशुल्क पौधे प्रदान किए जाएंगे। इसकी जानकारी आयोजन समिति के संयोजक कन्हैया सोनी एवं ललित मोहन ने दी।

कीटनाशक के विरुद्ध जन जागरण मुहिम शुरू, वर्कशॉप की भी तैयारी

किसानों और आम लोगों को ग्लाइफोसेट से जुड़े स्वास्थ्य और पर्यावरणीय खतरों के प्रति सचेत कर रहे

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

देशभर में आंशिक रूप से प्रतिबंधित खरपतवार नाशक ग्लाइफोसेट-बेस्ड हर्बिसाइड के विरुद्ध जनजागरण के लिए अखिल भारतीय स्तर की संस्था पेस्ट मैनेजमेंट एसोसिएशन-पुणे (पीएमए) ने छत्तीसगढ़ में अभियान शुरू किया है। इसके अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में इस कीटनाशक के दुष्प्रभाव से अवगत कराया जा रहा है। वहीं इस संबंध में सेमीनार और वर्कशॉप की भी तैयारी है। पीएमए छत्तीसगढ़ क्षेत्र प्रमुख मुहम्मद मजहर नदीम ने बताया कि संस्थान के प्रेसीडेंट रोहित जाटव की मौजूदगी में होने वाली वर्कशॉप में समूचे छत्तीसगढ़ के सभी पेस्ट कंट्रोल के सेवा प्रदाताओं को आमंत्रित किया जा रहा है। जिससे जमीनी स्तर पर व्यापक प्रभाव हो। उन्होंने बताया कि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य किसानों और आम लोगों को ग्लाइफोसेट से जुड़े स्वास्थ्य और पर्यावरणीय खतरों के प्रति सचेत करना तथा भारत सरकार के नियमों के अनुसार इसके नियंत्रित उपयोग के बारे में जागरूक करना है।

मजहर नदीम ने बताया कि देश में ग्लाइफोसेट आधारित हर्बिसाइड पर आंशिक प्रतिबंध है और इसके इस्तेमाल पर कड़े प्रतिबंध और नियम लागू किए गए हैं। जिसमें केंद्र सरकार ने ग्लाइफोसेट की बिक्री, वितरण या उपयोग के लिए सिर्फ पंजीकृत पेस्ट कंट्रोल सेवा प्रदाताओं को अधिकृत किया है। आम किसान या आम व्यक्ति सीधे तौर पर इसे खरीदकर फसलों पर नहीं छिड़क सकते हैं।

मजहर नदीम ने बताया कि हाल ही में ऑस्ट्रिया की यूनिवर्सिटी ऑफ नेचुरल रिसोर्सेज एंड लाइफ साइंसेज (बोकू) वियना के शोधकताओं ने ग्लाइफोसेट के इस्तेमाल वाले देशों में किए गए अध्ययन के चौंकाने वाले नतीजे प्रकाशित किए हैं। इसकी व्यापक चर्चा हो रही है। इस अध्ययन में पाया गया है कि ग्लायसोफेट के इस्तेमाल वाली जमीन में केंचुओं की गतिविधि और मिट्टी में पोषक तत्वों की मात्रा में बदलाव हो रहा है। इससे पता चलता है कि हर्बिसाइड के संपर्क में आने से सिर्फ.इंसानों और जानवरों पर ही नहीं, बल्कि जमीनी स्तर पर भी प्रभाव पड़ रहा हैं। आमतौर पर छत्तीसगढ़ में किसान इसका धड़ल्ले से इस्तेमाल करते हैं क्योंकि इसकी मारक क्षमता अच्छी होती है। लेकिन इसका नुकसान दीर्घकालीन रहता है।

मातृत्व-शिशु विभाग परिसर में किया पौधारोपण

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

स्व. पांडुरंग रामाराव डोंगांवकर जिला चिकित्सालय के मातृत्व-शिशु विभाग परिसर में पर्यावरण संरक्षण और हरियाली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन जीवन दीप समिति के आजीवन सदस्य दिलीप ठाकुर के नेतृत्व में किया गया।

पौधारोपण कार्यक्रम में सिविल सर्जन सह अधीक्षक डॉ. ए.के. मिंज की गरिमामय उपस्थिति रही। इस अवसर पर आरएमओ डॉ. ए.के. यादव, गायनिक विभाग प्रमुख डॉ. बी.आर. साहू एवं डॉ. विनीता ध्रुवे विशेष रूप से उपस्थित रहीं। अतिथियों एवं उपस्थित सदस्यों ने अस्पताल परिसर में विभिन्न प्रजातियों के पौधे रोपित कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

आयोजकों ने बताया कि पौधारोपण का उद्देश्य अस्पताल परिसर को अधिक हरा-भरा और स्वच्छ बनाने के साथ ही आमजन में पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं सक्रियता बढ़ाना है। सकारात्मक जनसेवा की भावना से आयोजित इस रचनात्मक पहल के माध्यम से लोगों को प्रकृति संरक्षण के प्रति जिम्मेदारी निभाने के लिए प्रेरित किया गया।

कार्यक्रम में जीवन दीप समिति के मानद सदस्य प्रशांत डोंगांवकर, आर.के. तिवारी, ओम सत्यम शिक्षण एवं जन विकास समिति के अध्यक्ष सीताराम ठाकुर, करणी सेवा के जिला अध्यक्ष नीलू सिंह, संजय कानखोजे सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे। पौधारोपण कार्यक्रम को सफल बनाने में जय राजन, पिल्ले, शाहनी चेरियन, लक्ष्मी धोटे सहित अन्य सहयोगियों का सक्रिय योगदान रहा। उपस्थित सदस्यों ने लगाए गए पौधों के संरक्षण एवं नियमित देखभाल का संकल्प भी लिया।

उत्तर बस्तर कांकेर : जिनसे कभी संघर्ष था, उन्हीं की कलाई पर बांधी राखी

चौगेल पुनर्वास केंद्र में आत्मसमर्पित माओवादियों ने डी आर जी जवानों को बांधी राखी, कहा—अब बंदूक नहीं, हुनर से संवारेंगे भविष्य

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

कभी जंगलों में बंदूक के साथ आमने-सामने रहने वाले हाथ आज भाईचारे और विश्वास के धागे से जुड़ गए। भानुप्रतापपुर क्षेत्र के ग्राम चौगेल (मुल्ला) स्थित पुनर्वास केंद्र में आज आत्मसमर्पित माओवादियों ने जिला रिजर्व गार्ड डी आर जी के जवानों को राखी बांधकर रक्षाबंधन का पर्व मनाया। यह दृश्य संघर्ष से शांति, हिंसा से मुख्यधारा और हथियार से हुनर की ओर बढ़ते बदलाव की भावुक तस्वीर बन गया।

आत्मसमर्पित माओवादी शांति कवाची ने बताया कि वह पहली बार रक्षाबंधन का त्योहार मना रही हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री कौशल विकास प्रशिक्षण के माध्यम से उन्होंने राखी बनाना सीखा और आज उन्हीं हाथों से तैयार की गई राखी पुलिस जवानों की कलाई पर बांधना उनके लिए बेहद खास और भावुक अनुभव है।

उन्होंने कहा कि आत्मसमर्पण के बाद अब ऐसा महसूस हो रहा है कि वे वास्तव में समाज की मुख्यधारा में लौट आई हैं। उन्होंने मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि नक्सल पुनर्वास नीति से प्रभावित होकर उन्होंने आत्मसमर्पण का निर्णय लिया। पुनर्वास केंद्र में उन्हें सिलाई, काष्ठशिल्प कला और राखी निर्माण सहित विभिन्न कौशलों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है, ताकि वे भविष्य में इन हुनरों के माध्यम से सम्मानपूर्वक आजीविका चला सकें और अपने परिवार के साथ समाज में सामान्य जीवन जी सकें। वहीं डी आर जी जवान टेकेश्वर हिचामी ने कहा कि पहले परिस्थितियां ऐसी थीं कि दोनों पक्ष बंदूक लेकर आमने-सामने रहते थे।

आज वही हाथ राखी के पवित्र धागे से जुड़े हैं। उन्होंने कहा, आज उनकी बांधी राखी हमारी कलाई पर है, जो भाई की लंबी उम्र और सुख-शांति की कामना का प्रतीक है। यह अपने आप में एक अलग और भावुक अनुभव है। यह रक्षाबंधन सिर्फ एक पर्व का उत्सव नहीं, बल्कि बदलाव की उस कहानी का प्रतीक है, जिसमें कभी संघर्ष का हिस्सा रहे लोग आज विश्वास और भाईचारे के रिश्ते को स्वीकार कर रहे हैं। पुनर्वास और कौशल विकास के माध्यम से आत्मसमर्पित माओवादी अब अपने हाथों में हथियार की जगह हुनर लेकर नई जिंदगी की शुरूआत कर रहे हैं।कल तक आमने-सामने थे, आज एक-दूसरे की कलाई पर विश्वास का धागा है। बंदूक से राखी तक का यह सफर, शांति और पुनर्वास की नई कहानी लिख रहा है।

अबूझमाड़ में बदला हवाओं का रुख

बस्तर के अबूझमाड़ क्षेत्र में बदलाव और शांति की एक नई बयार बहने लगी है। कभी बंदूक के साये और हिंसा के रास्ते पर चलने वाली, किंतु अब आत्मसमर्पण कर समाज की मुख्यधारा से जुड़ चुकी महिला माओवादियों ने रक्षाबंधन के पावन पर्व पर नारायणपुर पुलिस के डीआरजी परिसर में जवानों और पुलिस अधिकारियों की कलाई पर रक्षा-सूत्र बांधकर इस पवित्र रिश्ते को नई मानवीय संवेदनाओं से जोड़ दिया। यह भावुक क्षण केवल रक्षाबंधन मनाने तक सीमित नहीं था, बल्कि इसने बदलते बस्तर और सुरक्षा बलों तथा स्थानीय समाज के बीच बनते अटूट विश्वास का एक गहरा संदेश दिया। डीआरजी परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम के दौरान आत्मसमर्पित बहनों ने पुलिस अधीक्षक संदीप कुमार पटेल सहित अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अक्षय साबद्रा, अजय कुमार, ऐश्वर्य चंद्राकर और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को राखी बांधकर अपने प्रति स्नेह, सम्मान और सुरक्षा के संकल्प को महसूस किया। एक समय जो लोग भय और संघर्ष के माहौल में जीवन बिता रहे थे, वे आज पुलिस परिवार के साथ एक आत्मीय और पारिवारिक माहौल साझा करते नजर आए।

खास खबर

रक्षाबंधन पर राज्यपाल रमेन डेका ने भगवान जगन्नाथ के दर्शन कर बांधा रक्षासूत्र

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

रक्षाबंधन के पावन अवसर पर राज्यपाल रमेन डेका एवं फर्स्ट लेडी श्रीमती रानी डेका काकोटी ने आज रायपुर के गायत्री नगर स्थित श्री जगन्नाथ मंदिर पहुंचकर भगवान जगन्नाथ के दर्शन एवं विधिवत पूजन- अर्चन कर रक्षासूत्र बांधा। श्री डेका ने इस अवसर पर देश एवं प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि, खुशहाली एवं शांति की कामना की। उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन भाई-बहन के स्नेह, विश्वास और आपसी सौहार्द का पावन पर्व है, जो समाज में प्रेम और भाईचारे की भावना को मजबूत करता है। इस अवसर पर विधायक पुरंदर मिश्रा एवं गणमान्य श्रद्धालु उपस्थित रहे।

रक्षाबंधन के अवसर पर ब्रह्मकुमारी बहनों, एसओएस चिल्ड्रेन्स विलेजेस इंडिया, स्काउट और गाइड से जुड़े विद्यार्थियों ने बांधी राखी

राज्यपाल रमेन डेका को रक्षाबंधन के अवसर पर ब्रह्मकुमारी बहनों, एसओएस चिल्ड्रेन्स विलेजेस इंडिया, स्काउट एवं गाइड से जुड़े विद्यार्थियों ने बांधी राखीराज्यपाल रमेन डेका को रक्षाबंधन के अवसर पर ब्रह्मकुमारी बहनों, एसओएस चिल्ड्रेन्स विलेजेस इंडिया, स्काउट एवं गाइड से जुड़े विद्यार्थियों ने बांधी राखी

रक्षाबंधन के पावन पर्व पर लोक भवन में प्रजापिता ब्रह्मकुमारी की बहनों, एसओएस चिल्ड्रेन्स विलेजेस इंडिया के बच्चों, स्काउट एवं गाइड से जुड़े विद्यार्थी एवं शिक्षकों ने राज्यपाल श्री डेका को राखी बांधकर रक्षाबंधन का पर्व आत्मीयता एवं स्नेहपूर्वक के साथ मनाया। राज्यपाल रमेन डेका ने सभी के स्नेहपूर्ण भाव के लिए आभार व्यक्त करते हुए उन्हें रक्षाबंधन की शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद दिया। उन्होंने सभी के सुख, शांति, समृद्धि एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर प्रथम महिला श्रीमती रानी डेका काकोटी भी उपस्थित थीं।

भीतघरा मध्यम जलाशय योजना के सर्वेक्षण कार्य के लिए 2.80 करोड़ रूपए स्वीकृत

रायपुर। छत्तीसगढ़ शासन, जल संसाधन विभाग द्वारा जशपुर जिले के विकासखण्ड-बगीचा की भीतघरा मध्यम जलाशय योजना के सर्वेक्षण कार्य के लिए 2 करोड़ 80 लाख 32 हजार रूपए स्वीकृत किए गए है ।इससे क्षेत्र मे सिंचाई सुविधा की विस्तार होगा ।लोगों की पुरानी एक मांग भी पूरी होगी।

बहनों का स्नेह व आशीर्वाद मेरे लिए अनमोल : मुख्यमंत्री विष्णु देव साय

मुख्यमंत्री निवास में रक्षाबंधन का आत्मीय उल्लास, विभिन्न क्षेत्रों से पहुंचीं माताओं-बहनों ने बांधी राखी

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

मुख्यमंत्री निवास में रक्षाबंधन का पर्व आत्मीयता, स्नेह और उल्लास के वातावरण में मनाया गया। समाज के विभिन्न क्षेत्रों से पहुंचीं माताओं-बहनों ने मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय की कलाई पर राखी बांधकर उन्हें अपना स्नेह और आशीर्वाद दिया। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने सभी बहनों का आत्मीय स्वागत करते हुए कहा कि बहनों का यह स्नेह उनके लिए अनमोल है और उनका आशीर्वाद प्रदेश की सेवा के संकल्प को और मजबूत करता है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि रक्षाबंधन भाई-बहन के अटूट स्नेह, विश्वास और आत्मीयता का पावन पर्व है। बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बांधकर उसके सुखद और मंगलमय जीवन की कामना करती है, वहीं भाई अपनी बहन के सम्मान, सुरक्षा और सुख-दुःख में सदैव साथ खड़े रहने का संकल्प लेता है। मुख्यमंत्री ने कहा, मेरे लिए यह बड़े सौभाग्य का दिन है कि समाज के अलग- अलग क्षेत्रों से आप सभी बहनें रक्षाबंधन का पवित्र त्योहार मनाने मुख्यमंत्री निवास आई हैं। आप सभी का स्नेह और आशीर्वाद मुझे प्रदेश की माताओं-बहनों के कल्याण के लिए और अधिक समर्पण के साथ कार्य करने की प्रेरणा देता है।

कार्यक्रम में स्वर्गीय कर्नल अशोक कुमार दुबे की धर्मपत्नी श्रीमती सरला दुबे ने मुख्यमंत्री श्री साय को राखी बांधी। इस आत्मीय क्षण का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वर्गीय कर्नल अशोक कुमार दुबे सेना में शामिल होने वाले छत्तीसगढ़ के पहले जवान थे। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती दुबे से राखी बंधवाना उनके लिए विशेष रूप से भावुक और गौरवपूर्ण क्षण है।

कार्यक्रम में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की सविता दीदी एवं स्मृति दीदी, श्रीमती सावित्री जायसवाल, पद्मश्री डॉ. उषा बारले, छत्तीसगढ़ राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष श्रीमती ममता साहू, छत्तीसगढ़ फिल्म विकास निगम की अध्यक्ष सुश्री मोना सेन सहित महिला पत्रकारों, स्व-सहायता समूहों की दीदियों, लखपति दीदियों, ड्रोन दीदियों, ई-रिक्शा दीदियों, टीम प्रहरी, विभिन्न समाजों की महिलाओं और दिव्यांग बहनों ने मुख्यमंत्री को राखी बांधी।

जवानों की कलाई पर सजी राखी में राष्ट्र के प्रति सम्मान का भाव

मुख्यमंत्री श्री साय ने राजधानी रायपुर में आयोजित स्नेह की डोर कार्यक्रम का उल्लेख करते हुए कहा कि रक्षाबंधन के पर्व को देश और प्रदेश की सुरक्षा में समर्पित जवानों के प्रति सम्मान और कृतज्ञता के भाव से जोड़ना अत्यंत सुखद अनुभव रहा। उन्होंने कहा कि स्व-सहायता समूहों की बहनों, दिव्यांग बहनों और शहीद जवानों के परिवारों की महिलाओं ने सीआरपीएफ, बीएसएफ, सीआईएसएफ और आईटीबीपी सहित विभिन्न सुरक्षा बलों के लगभग 1600 जवानों की कलाई पर राखी बांधकर उनके प्रति अपना स्नेह और सम्मान व्यक्त किया। हमारे जवान त्योहारों पर भी अपने परिवार से दूर रहकर देश और प्रदेश की सुरक्षा के दायित्व का निर्वहन करते हैं। ऐसे वीर जवानों के प्रति सम्मान व्यक्त करना हम सभी का दायित्व है।

महिला पत्रकारों के साहस और समर्पण की मुख्यमंत्री ने की सराहना

मुख्यमंत्री श्री साय ने कार्यक्रम में उपस्थित महिला पत्रकारों का विशेष रूप से स्वागत करते हुए कहा कि पत्रकारिता साहस, संवेदनशीलता और जिम्मेदारी का कार्य है। हमारी महिला पत्रकार अनेक चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए समाज को देश-दुनिया के घटनाक्रम से अवगत करा रही हैं। मुख्यमंत्री ने आत्मीय प्रसंग साझा करते हुए बताया कि दिल्ली प्रवास से लौटने के दौरान आज सुबह एयरपोर्ट पर पत्रकार बहन जिज्ञासा ने उन्हें राखी बांधकर अपना स्नेह व्यक्त किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज स्व-सहायता समूहों की दीदियां, लखपति दीदियां, ड्रोन दीदियां, ई-रिक्शा दीदियां, सेटरिंग प्लेट दीदियां और मितानिन दीदियां अपने-अपने क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण की नई मिसाल प्रस्तुत कर रही हैं। पंचायत चुनावों में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण मिलने से स्थानीय नेतृत्व में महिलाओं की भूमिका और मजबूत हुई है। आज अनेक सरपंच दीदियां अपने नेतृत्व और नवाचार से गांवों के विकास को नई दिशा दे रही हैं। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में है। इसी उद्देश्य से महतारी वंदन योजना के माध्यम से प्रदेश की लगभग 68 लाख महिलाओं को प्रतिमाह एक हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है।

उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन का पर्व प्रदेश की माताएं-बहनें उत्साह और उमंग के साथ मना सकें, इसके लिए निर्धारित समय से पहले 25 अगस्त को ही महतारी वंदन योजना की 31वीं किस्त के रूप में 631 करोड़ रुपये से अधिक की राशि बहनों के बैंक खातों में अंतरित की गई। मुख्यमंत्री ने कहा कि महतारी वंदन योजना केवल आर्थिक सहायता की योजना नहीं है, बल्कि इसने महिलाओं के आत्मविश्वास को बढ़ाया है। बहनें इस राशि का उपयोग अपनी छोटी-छोटी आवश्यकताओं, बच्चों की पढ़ाई, स्वास्थ्य, बचत और आजीविका से जुड़ी गतिविधियों के लिए कर रही हैं।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश की महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने और उन्हें लखपति दीदी के रूप में सशक्त करने का संकल्प लिया है। देशभर में 6 करोड़ महिलाओं को लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ को 8 लाख महिलाओं को लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य मिला था, लेकिन प्रदेश ने लक्ष्य से आगे बढ़कर पिछले दो वर्षों में 13 लाख 85 हजार महिलाओं को लखपति दीदी बनाया है। यह छत्तीसगढ़ की माताओं-बहनों के परिश्रम, आत्मविश्वास और उद्यमशीलता का प्रमाण है।

मुख्यमंत्री ने ड्रोन दीदी योजना का उल्लेख करते हुए कहा कि गांव की महिलाएं अब आधुनिक तकनीक से जुड़ रही हैं। ड्रोन के माध्यम से खेतों में उर्वरक एवं दवा का छिड़काव कर वे अपनी आय बढ़ा रही हैं। प्रति एकड़ छिड़काव से लगभग 300 रुपये की आय होती है और 20 से 25 एकड़ में कार्य कर ड्रोन दीदियां प्रतिदिन 6 से 7 हजार रुपये तक कमा रही हैं।

ई-रिक्शा और सेटरिंग प्लेट से खुल रही स्वावलंबन की नई राह

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि महिलाओं को केवल योजनाओं का लाभार्थी नहीं, बल्कि आर्थिक गतिविधियों और विकास प्रक्रिया का मजबूत भागीदार बनाया जा रहा है। स्व-सहायता समूहों की बहनें अब परंपरागत आजीविका गतिविधियों के साथ नए क्षेत्रों में भी आगे बढ़ रही हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत प्रदेश में बड़े पैमाने पर आवास निर्माण हो रहा है और प्रतिदिन लगभग 1600 आवास बनाए जा रहे हैं। इन आवासों के निर्माण में उपयोग होने वाली सेटरिंग प्लेट के व्यवसाय से स्व-सहायता समूहों की महिलाएं जुड़कर अच्छी आय अर्जित कर रही हैं। मुख्यमंत्री ने ई-रिक्शा दीदियों का उल्लेख करते हुए कहा कि नया रायपुर में 92 ई-रिक्शा दीदियां आत्मनिर्भरता की नई मिसाल प्रस्तुत कर रही हैं। उन्होंने बताया कि जशपुर प्रवास के दौरान रक्षाबंधन के अवसर पर अपने गांव बगिया में 50 बहनों को ई-रिक्शा प्रदान किए गए हैं। ई-रिक्शा बहनों के लिए केवल आवागमन का साधन नहीं, बल्कि सम्मानजनक आजीविका और आर्थिक आत्मनिर्भरता का माध्यम बन रहा है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि सरकार का लक्ष्य प्रदेश की महिलाओं को आर्थिक रूप से इतना सशक्त बनाना है कि वे स्वयं उद्यम स्थापित करें और दूसरों को भी रोजगार दें। महतारी वंदन योजना से महिलाओं के बैंक खातों में नियमित राशि आने से उनकी आर्थिक विश्वसनीयता भी मजबूत हुई है और बैंक उन्हें व्यवसाय के लिए ऋण उपलब्ध कराने में आगे आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि महिलाओं के नाम जमीन की रजिस्ट्री कराने पर पंजीयन शुल्क में 50 प्रतिशत की छूट का लाभ दिया जा रहा है। पिछले ढाई वर्षों में लगभग 30 हजार महिलाओं के नाम पर रजिस्ट्रियां हुई हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ की नई औद्योगिक विकास नीति में महिला उद्यमियों के लिए विशेष रियायतों और प्रोत्साहनों का प्रावधान किया गया है। प्रदेश को अब तक लगभग 8.50 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। उन्होंने महिलाओं से औद्योगिक नीति में उपलब्ध प्रावधानों का अध्ययन कर उद्यमिता की दिशा में आगे बढ़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि सरकार चाहती है कि छत्तीसगढ़ की बहनें नौकरी और स्वरोजगार तक सीमित न रहें, बल्कि सफल उद्यमी बनकर प्रदेश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।

नक्सलवाद के अंत के साथ बस्तर में शांति और विकास का नया अध्याय

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि नक्सलवाद लंबे समय तक छत्तीसगढ़ के विकास में बड़ी बाधा रहा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की दृढ़ इच्छाशक्ति, सुरक्षा बलों के अदम्य साहस और क्षेत्र की जनता के सहयोग से नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक सफलता प्राप्त हुई है। उन्होंने कहा कि जिन क्षेत्रों में कभी हिंसा और भय का वातावरण था, वहां अब शांति, विश्वास और विकास की नई शुरूआत हुई है। सरकार सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार और आजीविका से जुड़ी सुविधाओं का तेजी से विस्तार कर रही है, ताकि विकास की मुख्यधारा से दूर रहे क्षेत्रों तक शासन की योजनाओं का पूरा लाभ पहुंचे।

मुख्यमंत्री ने पहलगाम आतंकी हमले का उल्लेख करते हुए कहा कि आतंकवादियों ने अनेक बहनों का सिंदूर उजाड़ा, लेकिन भारत ने आतंकवाद के विरुद्ध दृढ़ता के साथ जवाब दिया। उन्होंने कहा कि आज का भारत शांति में विश्वास रखने वाला सशक्त राष्ट्र है, जो किसी को छेड़ता नहीं है, लेकिन देश की सुरक्षा और स्वाभिमान को चुनौती देने वालों को मुंहतोड़ जवाब देना भी जानता है।

विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण में मातृशक्ति की भूमिका महत्वपूर्ण

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया है। ह्सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास के मंत्र के अनुरूप छत्तीसगढ़ भी विकसित भारत के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ प्राकृतिक एवं खनिज संपदा, वन संपदा, उर्वरा भूमि और प्राकृतिक सौंदर्य से समृद्ध प्रदेश है। यहां के लोगों की सरलता, सहजता और आत्मीयता ने पूरे देश में छत्तीसगढ़िया सबसे बढ़िया की पहचान बनाई है। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि विकसित छत्तीसगढ़ का सपना मातृशक्ति के सशक्तिकरण के बिना पूरा नहीं हो सकता। सरकार का संकल्प है कि प्रदेश की प्रत्येक माता-बहन को सम्मान और सुरक्षा मिले, वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनें और अपने सामर्थ्य एवं प्रतिभा के अनुरूप आगे बढ़ने के पूरे अवसर प्राप्त करें। उन्होंने रक्षाबंधन के अवसर पर प्रदेश की सभी माताओं-बहनों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि बहनों का स्नेह, विश्वास और आशीर्वाद सरकार की शक्ति है। मातृशक्ति के सामर्थ्य से ही सशक्त परिवार, समृद्ध समाज और विकसित छत्तीसगढ़ का निर्माण होगा।

पैगम्बर की शान में सुनाई नात शरीफ, बच्चों ने जीते ढेरों इनाम

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

जश्ने ईद मिलादुन्नबी के आयोजनों के सिलसिले में सैयदी मदरसा एकता नगर भिलाई-तीन में मदरसे के बच्चों के बीच नातिया मुकाबला हुआ। जिसमें भिलाई व आसपास के 100 से ज्यादा बच्चों ने एक से बढ़ कर एक नातिया कलाम पेश किए। आयोजन समिति की ओर से मुहम्मद उमर ने बताया कि सुबह से रात तक चले इस आयोजन में बच्चों को अलग-अलग वर्ग में इनाम दिए गए। वहीं स्कूली शिक्षा में 90 फीसदी और उससे ज्यादा अंक लाने वाले बच्चों को भी सम्मानित किया गया।

मुहम्मद उमर ने बताया कि नातिया कलाम उस काव्य या शायरी को कहते हैं जिसमें पैगंबर हजरत मुहम्मद साहब की शान, उनकी तारीफ, उनके गुणों और उनकी सीरत (जीवन चरित्र) का बखान किया जाता है। इसके लिए मदरसे के सभी बच्चों ने अच्छी तैयारी की थी। निर्णायकगणों ने भी सभी बच्चों की पेशकश को सराहा। हाफिज कलीम अशरफी साहब की सरपरस्ती में हुए इस आयोजन में इमाम ओ खतीब हाफिज अकील अशरफी, मौलाना साबिर रजा मस्जिद मजार कमेटी के सदर रुस्तम खान , कैशियर रईस अहमद, सेक्रेटरी नसीम खान, हाजी समद ,हाजी नईम कुरैशी, हाजी बशीर खान और हाजी अली रजा मौजूद थे। आयोजन समिति में अबुल हसन, मोहम्मद इरफान, वाजिद अंसारी, फिरोज अहमद खान, मोहम्मद हाशिम रजा, इमरान खान, गुलजार, साहिल शेख, मोहसिन रजा, मुख्तार, शाहिद रजा, अयान शाह, अदीब शाह, सलीम रजा और आसिफ अहमद खान शामिल हैं।

नातिया कलाम में इन बच्चों ने बाजी मारी

इन मुकाबलों में 11 वर्ष तक के उम्र समूह में लड़कियों में अव्वल कहकशां बानो, दूसरा मोहसिना कुरैशी, तीसरा अलिजा अंजुम, लड़कों में अव्वल मोहम्मद मोईन, दूसरा अल्तमश रजा, तीसरा अयान अली, 12 से 13 उम्र समूह में लड़कियों में अव्वल जैनब फातिमा, दूसरा आतिफा, तीसरा सिफत, लड़कों में अव्वल सैयद अरमान, दूसरा कुर्बान रजा, तीसरा सिब्तैन और मोहम्मद हुसैन रहे। 14 वर्ष या उसके ऊपर के उम्र समूह में लड़कियों में अव्वल जिया अंजुम, दूसरा गौसिया फातिमा,तीसरा स्वालेहा अंजुम, लड़कों में अव्वल अब्बास रजा सईदी मदरसा एकता नगर, दूसरा मोहम्मद नूर और तीसरा आदिल हुसैन रहे। इसके साथ ही आयात फातिमा, साहिबा, आलिया,अफशा अंजुम ,राशिद, मोईन अशरफ,साएबा अंजुम और मोहम्मद हुसैन सैयदी को विशेष इनाम दिए गए।

एकेडमिक वर्ष 2025- 2026 में 90 फीसदी से ऊपर अंक लाने वालों में फरहत परवीन दसवीं को टॉप परफार्मर अवार्ड और लैपटॉप दिया गया। वहीं गौसिया फातिमा, अलीना फातिमा, जीनत बानो और नफीस अहमद को बेस्ट परफॉर्मर अवार्ड दिया गया आयोजन में सैयद ट्यूशन में पढ़ाने वाले शिक्षकों फरहान कुरैशी, अयान शाह, अल्फिया, मुस्कान शेख,अनीसा अंसारी और आफरीन परवीन को सम्मानित किया गया।

राजनांदगांव में खेल दिवस की जोरों पर तैयारी ध्यानचंद चौक पर चला साफ-सफाई अभियान

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद के जन्मदिवस पर 29 अगस्त को राजनांदगांव में राष्ट्रीय खेल दिवस उत्साह के साथ मनाया जाएगा। जिला प्रशासन, खेल एवं युवा कल्याण विभाग, छत्तीसगढ़ हॉकी और जिला हॉकी संघ के संयुक्त तत्वावधान में विविध कार्यक्रम होंगे।

तैयारियों के तहत गौरवपथ स्थित मेजर ध्यानचंद चौक पर प्रतिमा की साफ-सफाई और सौंदर्यीकरण किया जा रहा है। महापौर मधुसूदन यादव और आयुक्त जी आर मरकाम के निर्देश तथा जिला हॉकी संघ के अध्यक्ष फिरोज अंसारी व सचिव शिवनारायण धकेता के मार्गदर्शन में परिसर की झाड़ियों की कटाई कर उसे व्यवस्थित किया गया। इस दौरान राजेश मिश्रा, अजय झा, भूषण साव सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

राष्ट्रीय खेल दिवस पर सुबह 7 बजे अंतर्राष्ट्रीय हॉकी स्टेडियम से रैली निकलेगी, जो गौरवपथ स्थित ध्यानचंद चौक पहुंचेगी। वहां प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी जाएगी, फिर रैली वापस स्टेडियम लौटेगी। स्टेडियम में संगोष्ठी का आयोजन होगा, जिसमें मेजर ध्यानचंद के जीवन और भारतीय हॉकी में उनके योगदान को याद किया जाएगा। इस दौरान दो प्रदर्शनी हॉकी मैच भी खेले जाएंगे।

खेल विभाग और जिला हॉकी संघ ने सभी खिलाड़ियों, प्रशिक्षकों और खेल प्रेमियों से अधिक संख्या में शामिल होने की अपील की है।

संपादकीय

संस्कृति को बचाए रखने मयार्दा जरूरी होती है

परिवार,समाज व देश की एक संस्कृति होती है। संस्कृति का आधार होता है संस्कार, मनुष्य को संस्कार परिवार से मिलते हैं। यह पारिवारिक संस्कार होते हैं,परिवारों से मिलकर समाज बनता है तो समाज के संस्कार सामाजिक संस्कार होते हैं। समाजों से मिलकर देश बनता है तो देश के संस्कार देशीय संस्कार कहे जाते हैं। हमारे घर, भोजन, वस्त्र, पूजा के विधिविधान यानी रोज हम जो कुछ करते हैं,वही हमारे संस्कार होते हैं और उससे हमारी संस्कृति बनती है। संस्कृति को बचाए रखने के लिए संस्कार को बनाए रखने का जरूरी होता है यानी हमको रोज या तीज त्यौहार में वही करना चाहिए जो हम अब तक करते आए हैं। जो हम पीढियों से करते आए है, वही हम अपनी पीढ़ी में भी करते हैं तो यही हमारी परंपरा कही जाती है। हमारी परंपरा मतलब होता है हमारे परिवार की परंपरा,समाज की परंपरा,देश की परंपरा।

जब भी इस परंपरा को बदलने का प्रयास किया जाता है तो परंपरा को मानने वालों को यह अच्छा नहीं लगता है। ऐसा लगता है परिवार,समाज व देश के संस्कार को नष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है। यही वजह है कि परंपरा व मयार्दा को मानने लोग इसका विरोध करते हैं। उनके विरोध की वजह यह होती है वह अपनी संस्कृति को बनाए व बचाए रखना चाहते हैं। क्योंकि वह जानते हैं हिंदू सभ्यता संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास हजारों साल से किया जा रहा है और वह बची हुई है तो इसी वजह से बची हुई है कि ज्यादातर लोग परंपरा व मयार्दा का पालन करते हैं और जब भी परंपरा व मयार्दा का उल्लंघन किया जाता है तो वह विरोध करते हैं और उनके विरोध के कारण ही परंपरा व मयार्दा का उल्लंघन करने वालों को अपने कदम पीछे खींचने पड़ते हैं। कई बार हिंदू तीज-त्यौहार के वक्त ही ऐसा जानबूझकर किया जाता है। इस बार राखी के त्यौहार के पहले ऐसा करने का प्रयास किया गया।

ज्वेलरी ब्रांड ग्रीवा ने राखी के पहले एक 35 सेकंड का विज्ञापन जारी किया। इसमें कृति सेनन जो कपड़े पहने कर अपने भाई का राखी बांधने के बाद अपने पालतू कुत्ते को राखी बांधती दिखाई गई हैं। यह देश के ज्यादातर लोगों को पसंद नहीं आया,लोगों को बहुत बुरा लगा और लोगों की प्रतिक्रिया रही कि यह भाई बहन के पवित्र त्यौहार का मजाक उड़ाने की कोशिश है, इसके लिए कृति सेनने भी उतनी ही दोषी हैं।ऐसे बेवकूफी भरे विज्ञापन विरोध व ध्यान दिलाने के बाद भी आते रहते है,यह गंभीर बात है। रक्षाबंधन में तिलक व आरती की परंपरा है, इस विज्ञापन में दोनो ही नहीं दिखाई गए। बहुत से लोगों को कुत्ते का राखी बांधना भी बहुत बुरा लगा है कि भाई व कुत्ता का दर्जा कैसे बराबर को हो सकता है।बहन के लिए भाई भाई होना चाहिए और है और कुत्ता कुत्ता होना चाहिए।

कुछ आधुनिक आचार विचार के लोगों को यह अच्छा लगा है और उनका कहना है कि इसमें कोई बुराई नहीं है। कृति सेनन का कहना है कि किसी महिला की संस्कृति के प्रति निष्ठा उसके कपड़े से नहीं आंकी जानी चाहिए। आखिर हम महिलाओं को ये बताना कब बंद करेंगे कि उन्हें क्या पहनना चाहिए।समय के साथ पारंपरिक फैशन भी बदला है लेकिन आज भी किसी महिला की संस्कृति के प्रति सम्मान को सिर्फ उसके कपड़े से क्यों मापा जाता है। कल्चर व ट्रेडिशन तो उसके दिल में होते हैं।उसकी नेकलाइन मे नहीं। इस मामले में राहुल गांधी को भी लगा कुछ कहना जरूरी है तो उन्होंने कृति सेनन का समर्थन करते हुए कहा कि एक महिला क्या पहनती है,क्या करती है,यह उसकी पसंद है,महिलाओं को उनकी आजादी के लिए ट्रोल करना बंद करें। चूंकि देश के बहुसंख्यक समाज को ज्वेलरी ब्रांड का यह विज्ञापन पसंद नहीं आया उसकी कटु आलोचना हुई तो उसने अपना विज्ञापन वापस ले लिया है। उसका कहना है कि हम भारतीय संस्कृति,परंपरा और त्यौहारों का बहुत सम्मान करते हैं, एक ब्रांड के तौर पर हमारा मानना है कि इन खुशियों भरे पल को पूरे परिवार के साथ मनाना चाहिए। हमारे विज्ञापन से समाज के किसी वर्ग की भावनाओं को ठेस पहुंची है तो हमारा कोई इरादा नहीं था।सम्मान के तौर पर हमने विज्ञापन वापस ले लिया है।

ज्वेलरी ब्रांड कंपनी ग्रीवा व अभिनेत्री कृति सेनन के बयानों से तो लगता है कि वह इस देश की हिंदू संस्कृति का सम्मान करते हैं लेकिन उनके आचरण से तो ऐसा नहीं लगता है अगर वह वाकई में इस देश की संस्कृति का सम्मान करते तो इस देश के लोगों की परंपरा व मयार्दा का पालन करते।यह विज्ञापन अगर उन्होंने अपने लिए बनाया होता तो इस पर कोई ध्यान नहीं देता यह विज्ञापन इस देश के लोगों को दिखाने के लिए बनाया गया है तो कंपनी और एक्ट्रेस को इस बात का गंभीरता से ध्यान रखना था कि इससे देश के लोगों को बुरा न लगे। हम अपने घर में खिड़की,दरवाजा बंद कर कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र है लेकिन जब हम कुछ भी सार्वजनिक जीवन में करते हैं तो हमारी कुछ करने की स्वतंत्रता असीमित नहीं होती है। हमें कुछ करते हुए दूसरों का ख्याल रखना पड़ता है उन्हें किसी तरह की परेशानी न हो।सभ्य व संस्कृत नागरिक तो उसे ही कहा जाता है कि जिसके आचार विचार से किसी को कोई परेशानी न हो। दूसरे का ख्याल रखने वाले नागरिक ही वास्तव मे देश की सभ्यता व संस्कृति के रक्षक होते हैं और उनके कारण ही देश की सभ्यता व संस्कृति बची रहती है।

तकनीक के जंगल में खो सकती है भाषाई विरासत !

क्या एआई छीन लेगा हमारी भाषाओं की आत्मा

संजय उवाच

प्रो. संजय द्विवेदी

अब जब वह जमाना बीत रहा है जिसमें हम अपने पसंदीदा लेखकों को मुग्ध होकर पढ़ते थे, उनकी भाषा, उनकी शैली की दीवानगी हमें उनसे जोड़कर रखती थी। यह ऐसा रिश्ता था जो हमें किसी खास लेखक का पाठक बना देता था। क्या डिजिटल क्रांति के इस दौर में मशीनें जिस तरह लिख-पढ़ रही हैं, लेखकों का वजूद रह जाएगा? जनरेटिव एआई अब केवल तकनीकी टूल न रहकर भाषा, विचार और अभिव्यक्ति का माध्यम बन रही हैं, उससे चिंता की लकीरें गहरी हो गयी हैं। हमें आश्वासन दिए जा रहे हैं कि वे एक मशीनी भाषा लिखेंगीं, पर दिल कहां से लाएंगी? संवेदनाएं कहां से लाएंगीं? लेकिन दिमाग इस तरह से भी सोचता है कि अगर वे दिल और भावनाएं भी ला सकीं, हमारे आपके जैसा ही सोचने और लिखने लगीं तो क्या होगा?

हमारे लिए क्या छोड़ेंगी मशीनें ?

बहुत कुछ तो एआई कर ही रहा है। सीखते हुए बड़ी और समझदार हो रही मशीनें क्या हमें लिखने लायक भी छोंडेंगी? मशीनों पर बढ़ती निर्भरता क्या हमें मौलिक चिंतन के लायक छोड़ेगी? ये बड़े सवाल हैं। एआई के अनेक टूल्स हिंदी और भारतीय भाषाओं में धाराप्रवाह लिख रहे हैं, कंटेट क्रिएट कर रहे हैं। यह हमारी भाषाई विविधता के लिए बड़ा अवसर है या भाषाई पहचान और भाषा से जुड़े व्यवसाय के लिए संकट के दिन, कहना कठिन है। माना जा रहा है कि ये प्रयोग डिजिटल खाइयों (डिजिटल डिवाइड) को कम करेंगें। अंग्रेजी न लिखने, बोलने और समझने वाले बड़े समाज के लिए बहुत कुछ पहुंच में आ जाएगा। वे सरकारी योजनाओं, सेवाओं, सूचनाओं को अपनी भाषा में ग्रहण कर सकेंगें। भारतीय भाषाओं का 'रीयल टाइम अनुवाद' हमारी भाषाई सद्भावना को बढ़ाने का काम करेगा। हमारा संपूर्ण भारतीय साहित्य और ज्ञान परंपरा सब भाषा भाषियों तक पहुंच सकेगा। इसी के साथ लुप्त हो रही बोलियां, संवाद और लोक परंपराएं और प्रदर्शन कलाएं संरक्षित किए जाने की पहल भी हो सकती है। डिजिटल आकाईव हमें यह सुविधा देगा कि हम अपना बहुत कुछ बचा सकें और अपनी-अपनी भाषाओं में उसे सुन सकें, पढ़ सकें।

क्या रूप, रस, गंध खो बैठेंगीं भाषाएं ?

सबसे बड़ा संकट है भाषाओं की आत्मा का। उसकी चिति का। उसके मुहावरों- लोकोक्तियों का। उसके नाद का। मशीनी अनुवाद,मशीनी लेखन से भाषाएं क्या अपना मूल रस,स्वाद,गंध और भाव खो बैठेंगी। क्या उन्हें संवेदना के तल पर रिक्त छोड़ दिया जाएगा। क्या भाषाएं अब सूचना की वाहक तो होंगीं किंतु भावों का निर्वहन करने लायक नहीं बचेंगीं? हमारे एआई माडल्स मूलतः पश्चिमी या अंग्रेजी डेटासेट पर प्रशिक्षित हैं। वे भारतीय भाषाओं का सुंदर अनुवाद कर रहे हैं। लेकिन उसमें प्रयुक्त मुहावरों, लोकोक्तियों, मानवीय संस्पर्श की कोमल भावनाओं, व्यंग्य और भावनात्मक गहराई को छू नहीं पा रहे हैं। संभावना है कि वे भविष्य में इन्हें छूने और पकड़ने का प्रयास करें।

भाषाई समरूपता कई बार भाषा प्रवाह में ही बाधा बनती है। मशीनी अनुवाद की सीमाएं भी जाहिर ही हैं। इनके कारण लेखन में मशीनीपन और भाषा में भाव की कमी साफ दिखती है। भारतीय भाषाओं की डेटा आज भी बहुत कम है। वे समाज में गहरी पैठी हुई भाषाएं तो हैं किंतु डिजिटल दुनिया में उनकी उपस्थिति अभी सीमित है। ऐसे में स्थानीय डेटासेट बड़ी संभावनाओं के द्वार खोलता है। भारतीय भाषाओं के लिए स्वदेशी टूल्स (एलएलएम्स) का विकास जरुरी है, जिससे हमारी भाषाएं भी अपने सामर्थ्य का प्रदर्शन यहां कर सकें। इससे हमारी संस्कृति, हमारी वाक परंपरा और व्याकरण का संरक्षण भी होगा। सभी कहते हैं कि एआई को सहायक के रुप में देखें न कि लेखक के रूप में। लेकिन एआई पर बढ़ती निर्भरता क्या लेखक के विचारों और उसकी चिंतन प्रक्रिया को अनुकूलित नहीं करेगी? वह उन्हीं विषयों, विचारों और दायरों में कैद होकर रह जाएगा जहां एआई उसे ले जाएगी। स्वतंत्र चिंतन के लिए एआई का प्रयोग कितना उपयोगी है, यह सोचने की जरुरत है। आज हमारे पास कोई नीतिगत ढांचा और नैतिक निर्देश नहीं हैं। ऐसे में हम अपनी हदों और सरहदों को कैसे तय करें?

संस्कृति की वाहक है भाषा

इसमें दो राय नहीं कि एआई के पास भाषा आ चुकी है। वह उसे लिखना, बोलना और व्यक्त करना जानता है। कई बार उसकी भाषा परिशुद्ध भी होती है, गलतियों के बिना और व्याकरणपरक भी। बावजूद इसके उसके मशीनीकृत रूप के भी कई रूप रचे जा सकते हैं। वह अनेक शैलियों में पारंगत हो रहा है। अनुवाद कुशल तो वह है ही। ऐसे में भाषा की आत्मा का क्या होगा, यह प्रश्न ज्यों का त्यों सामने खड़ा है। भाषा अकेली नहीं आती, वह किसी संस्कृति की वाहक होती है। स्थानीयता की भी वाहक होती है। संवेदना, विचार, संस्कृति और स्थानीय तत्वों से मिलकर भाषा अपने मुहावरे में ही मुक्ति पाती है। इससे उसकी दुनिया बड़ी होती है। उसका पाठक संसार खड़ा होता है। भारतीय भाषाओं के सामने सबसे बड़ा संकट यही है क्या वे अपनी मूल चेतना और रस-गंध को खो बैठेंगीं? वे सूचनाएं देंगी पर पर कुछ कहेंगीं नहीं। बतियाएंगी नहीं। उनमें बातें कहने की क्षमता हो सकती है पर वे संवाद नहीं कर पाएंगी।

सूचना का सुपर हाइवे मौलिकता की बलि न ले

तकनीक की तेज रफ्तार के बीच में हमें भाषाई मौलिकता,मानवीय संस्पर्श को बचाए और बनाए रखने के सचेतन प्रयास करने होगें। डिजिटल क्रांति से भाषाओं का विस्तार तो हो किंतु उनकी मूल संवेदना, मुहावरे, लोकोक्तियां और संस्कृति न छूटें इसका प्रयास हम भाषाप्रेमियों को ही करना होगा। भाषाई दीवारें गिराने पर आमादा एआई हमारे लिए एक अवसर है, किंतु यह अवसर आत्मसमर्पण का कारण नहीं बने, इसके लिए हमें सोचना होगा। शब्द इंसान के हों किंतु भाषा मशीनी हो ऐसा तो हममें से कोई नहीं चाहेगा। सूचना का यह सुपर हाइवे हमारी मौलिकता की बलि न ले ले, इसकी जिम्मेदारी हर उस व्यक्ति की है जो अपनी भाषा से प्यार करता है।

(लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल में जनसंचार विभाग के अध्यक्ष हैं।)

नेपाल में बाढ़ की त्रासदी : हिमालय के बदलते मिजाज की चेतावनी

गोपेन्द्र नाथ भट्ट

नेपाल में 26 अगस्त 2026 को आए विनाशकारी फ्लैश फ्लड ने हिमालयी क्षेत्र की संवेदनशीलता को एक बार फिर दुनिया के सामने ला दिया है। नेपाल-तिब्बत सीमा के निकट अचानक आई बाढ़ ने देखते ही देखते गांवों, सड़कों, पुलों और अन्य आधारभूत ढांचे को अपनी चपेट में ले लिया। राहत और बचाव दल मलबे में जीवन तलाश रहे हैं और लापता लोगों की संख्या लगातार चिंता बढ़ा रही है।

प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, इस त्रासदी की प्रमुख वजह ऊंचाई वाले क्षेत्र में ग्लेशियर के एक हिस्से का टूटना और उसके साथ बर्फ, चट्टानों तथा मलबे का तेजी से नीचे आना माना जा रहा है। इससे अचानक जल और मलबे का ऐसा सैलाब बना, जिसने भोटेकोशी और त्रिशूली नदी घाटियों में तबाही मचा दी। विशेषज्ञों के अनुसार यह सामान्य मानसूनी बाढ़ से अलग एक अत्यंत तीव्र हिमस्खलन-जनित फ्लैश फ्लड थी।

त्रासदी का मानवीय पक्ष सबसे भयावह है। नेपाल और तिब्बत में मृतकों की संख्या सैकड़ों तक पहुंच चुकी है और एक हजार से अधिक लोग अब भी लापता बताए जा रहे हैं। इनमें बड़ी संख्या विदेशी पर्यटकों और तीर्थयात्रियों की है। सैकड़ों भारतीय समुदाय के लोगों के भी हताहत होने की सूचना है। नेपाल का बाद प्रभावित क्षेत्र कैलाश मानसरोवर यात्रा और हिमालयी पर्यटन के मार्ग से भी जुड़ा है, इसलिए अनेक देशों के नागरिक इस आपदा की चपेट में आए हैं।

बाढ़ ने नेपाल के परिवहन और संचार तंत्र को भी भारी नुकसान पहुंचाया है। कई पुल और सड़कें बह गईं तथा जलविद्युत परियोजनाएं प्रभावित हुई हैं। दुर्गम पर्वतीय भूगोल के कारण राहत दलों के लिए प्रभावित क्षेत्रों तक पहुंचना चुनौती बना हुआ है। हेलीकॉप्टरों के माध्यम से बचाव अभियान चलाया जा रहा है और नेपाल की सेना तथा सुरक्षा एजेंसियां बड़ी संख्या में लोगों को सुरक्षित निकालने में जुटी हैं।

इस आपदा का सबसे बड़ा संदेश केवल राहत और पुनर्वास तक सीमित नहीं है। हिमालय तेजी से बदल रहा है। ग्लेशियरों का पिघलना, तापमान में वृद्धि और पर्वतीय क्षेत्रों में बढ़ता निर्माण प्राकृतिक जोखिमों को और गंभीर बना रहे हैं। विशेषज्ञों ने भी चेताया है कि जलवायु परिवर्तन के दौर में ग्लेशियरों की अस्थिरता ऐसी घटनाओं की आशंका बढ़ा सकती है।

नेपाल की त्रासदी भारत के लिए भी गंभीर चेतावनी है, क्योंकि हिमालय दोनों देशों की साझा प्राकृतिक व्यवस्था है। उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश जैसे भारतीय हिमालयी क्षेत्र भी ग्लेशियर, भूस्खलन और अचानक आने वाली बाढ़ के जोखिम से जूझते हैं। इसलिए सीमा से परे साझा हिमालयी आपदा-पूर्व चेतावनी तंत्र, वैज्ञानिक निगरानी और पर्यावरण-सम्मत विकास समय की आवश्यकता है।

नेपाल की इस त्रासदी में राहत सबसे पहली प्राथमिकता है, लेकिन दीर्घकालीन सबक उससे भी बड़ा है—प्रकृति के संकेतों को नजरअंदाज करके विकास की कीमत मानव जीवन से नहीं चुकाई जा सकती। हिमालय केवल पर्वत नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों के जीवन का आधार है। उसकी सुरक्षा ही अंततः पूरे दक्षिण एशिया की सुरक्षा है।

कविता का कोना

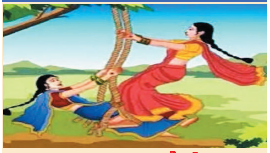

सावन का मजा कैसे लूं

बरस-बरस के सावन, नदिया बह रही है,
कहीं डूब रहे हैं घर, कहीं तबाही कह रही है।
बह गए हैं कपड़े, चूल्हे भी बुझ गए,
रोटी के इंतजार में नन्हे हाथ रुक गए।
आज फिर भूखे रहने की बारी है,
आंखों में बेबसी, दिल में लाचारी है।
कोई सावन में झूले, कोई गीत गाए,
कोई मेहंदी रचाए, खुशियां मनाए,
पर कैसे सावन का मजा लूं मैं,
जहां चारों ओर आंसुओं की बाढ़ आई है।
किसी मां की आंखों में बच्चों की चिंता है,
किसी पिता के कंधों पर घर बचाने की जिम्मेदारी है।
किसी की छत बह गई, किसी का आशियाना,
बारिश ने छीन लिया जीने का बहाना।
बादल तो बरस रहे हैं अपनी पूरी रवानी से,
पर दिल रो रहा है लोगों की परेशानी से।
जहां भूख ने दस्तक दी हो हर घर की चौखट पर,
वहां सावन का उत्सव कैसा, खुशियां कैसी?

कवियत्री-ममता दुबे भिलाई

टकराव के बजाय संवाद की ओर भारत और चीन

महेन्द्र तिवारी

भारत और चीन के बीच वास्तविक नियंत्रण रेखा पर तनाव घटाने के उद्देश्य से 2 नई सीधी संपर्क रेखाओं यानी त्वरित संवाद तंत्र और 2 अतिरिक्त सीमांत कार्मिक बैठक स्थलों की स्थापना पर बनी सहमति द्विपक्षीय संबंधों में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और सामरिक मोड़ का संकेत देती है। वर्ष 2020 की गलवान घाटी की दुर्भाग्यपूर्ण हिंसक झड़प के बाद से दोनों एशियाई महाशक्तियों के बीच अविश्वास की एक गहरी खाई बन गई थी, जिसने दोनों पक्षों को हजारों सैनिकों और भारी सैन्य उपकरणों को सीमांत क्षेत्रों में तैनात करने के लिए विवश कर दिया था। इस पृष्ठभूमि में संवाद के नए संस्थागत माध्यमों का निर्माण केवल एक सामान्य प्रशासनिक कदम नहीं है, बल्कि यह दोनों देशों के शीर्ष नेतृत्व द्वारा सीमा पर किसी भी अप्रत्याशित सैन्य संघर्ष की संभावना को टालने की एक व्यावहारिक और यथार्थवादी इच्छाशक्ति को भी दशार्ता है। हिमालय की दुर्गम और संवेदनशील भौगोलिक परिस्थितियों में स्थित 3488 किलोमीटर लंबी वास्तविक नियंत्रण रेखा पर शांति बनाए रखना क्षेत्रीय सुरक्षा और वैश्विक स्थिरता दोनों के लिए अनिवार्य है।

सीमा प्रबंधन के इतिहास पर दृष्टि डालें तो भारत और चीन के बीच वर्ष 1993 में सीमा पर शांति और स्थिरता बनाए रखने का समझौता हुआ था। इसके बाद वर्ष 1996 में सैन्य क्षेत्र में विश्वास बहाली के उपायों पर सहमति बनी और आगे चलकर वर्ष 2005 तथा 2013 में भी सीमा रक्षा सहयोग के विभिन्न समझौतों को अंतिम रूप दिया गया। इन सभी समझौतों का मूल उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि दोनों देशों के सैनिक जब गश्त के दौरान आमने-सामने आएँ तो किसी भी प्रकार के हथियारों का प्रयोग न हो और तनाव को स्थानीय स्तर पर ही शांत कर लिया जाए। वर्ष 2020 की घटनाओं ने इस पुराने तंत्र की सीमाओं और व्यावहारिक कमजोरियों को उजागर कर दिया था। ऐसे में 2 नई सीधी संपर्क व्यवस्थाओं और 2 नए बैठक स्थलों को जोड़ना इस पुराने सुरक्षा ढांचे को आधुनिक चुनौतियों के अनुरूप अधिक प्रभावी, त्वरित और जवाबदेह बनाने का एक ठोस प्रयास है।

त्वरित संचार तंत्र अथवा सीधी संपर्क रेखा का मुख्य लाभ यह होता है कि यह संकट के समय समय की बबार्दी को न्यूनतम कर देता है। उच्च हिमालयी क्षेत्रों में जहाँ अत्यधिक ठंड, ऑक्सीजन की कमी और विषम मौसम के कारण संचार के पारंपरिक माध्यम बाधित हो सकते हैं, वहाँ विशेष सैन्य कमानों के बीच त्वरित संपर्क किसी भी गलत सूचना को फैलने से रोकता है। अक्सर सीमा पर तनाव सैनिकों की आक्रामक गश्त, एक-दूसरे के गश्ती दल के मार्ग में आने या अनजाने में नियंत्रण रेखा पार करने से उत्पन्न होता है। यदि स्थानीय कमांडर तुरंत एक-दूसरे से बात करने में सक्षम न हों, तो यह स्थानीय घटना कुछ ही घंटों में रणनीतिक स्तर के बड़े सैन्य संकट का रूप ले सकती है। नई संचार रेखाएँ दोनों सेनाओं के उच्चाधिकारियों को तत्काल स्थिति स्पष्ट करने और निचले स्तर के सैनिकों को शांत रहने का आदेश देने का प्रत्यक्ष अधिकार प्रदान करती हैं।

इसी प्रकार सीमा कार्मिक बैठक स्थलों का अपना अलग व्यावहारिक महत्व है। वर्तमान में भारत और चीन के बीच लद्दाख से लेकर अरुणाचल प्रदेश तक केवल 5 आधिकारिक बैठक स्थल सक्रिय रहे हैं, जिनमें दौलत बेग ओल्डी, चुशूल, नाथू ला, बुम ला और किबिथू शामिल हैं। इतनी लंबी और भौगोलिक रूप से कटी हुई सीमा के लिए 5 बिंदु अक्सर पर्याप्त नहीं होते थे, क्योंकि दूरदराज के क्षेत्रों में किसी विवाद की स्थिति में अधिकारियों को औपचारिक वार्ता के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ती थी। 2 नए बैठक स्थलों की स्थापना से स्थानीय स्तर पर कमान संभालने वाले अधिकारियों को अपने ही क्षेत्र में बहुत कम समय में आमने-सामने बैठकर बातचीत करने की सुविधा मिलेगी। जब दोनों पक्षों के सैन्य प्रतिनिधि नियमित रूप से मिलते हैं, तो न केवल सामयिक समस्याओं का समाधान होता है, बल्कि एक-दूसरे के दृष्टिकोण और संवेदनशीलताओं को समझने का मानवीय अवसर भी विकसित होता है।

वास्तविक नियंत्रण रेखा की सबसे बड़ी जटिलता यह है कि यह दोनों देशों के बीच औपचारिक रूप से सीमांकित या चिन्हित नहीं है। दोनों पक्ष अपनी-अपनी धारणाओं के आधार पर गश्त करते हैं, जिससे कई क्षेत्रों में दोनों की सीमा रेखाएँ आपस में टकराती हैं। डेपसांग, डेमचोक, गोगरा-हॉट स्प्रिंग्स और पैंगोंग त्सो जैसे क्षेत्रों में यह टकराव बार-बार देखने को मिला है। ऐसे में विश्वास बहाली के नए उपाय सैनिकों के बीच अप्रत्याशित मुठभेड़ों को रोकने के लिए एक प्राथमिक रक्षा कवच की तरह कार्य करते हैं। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि जब तक राजनीतिक और कूटनीतिक स्तर पर सीमा का अंतिम समाधान नहीं निकल जाता, तब तक जमीनी स्तर पर कोई अनचाहा संघर्ष न भड़के।

हालाँकि, इस नए कूटनीतिक समझौते के सकारात्मक पहलुओं के साथ-साथ जमीनी यथार्थ से जुड़ी गंभीर चुनौतियों को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। संचार तंत्र और बैठक बिंदु केवल संकट प्रबंधन के साधन हैं, वे विवाद का अंतिम समाधान नहीं हैं। सबसे पहली और प्रमुख चुनौती वास्तविक नियंत्रण रेखा पर दोनों ओर से बड़े पैमाने पर तैनात सैनिकों और हथियारों की वापसी है। जब तक अग्रिम मोर्चों से भारी सैन्य जमावड़ा पीछे नहीं हटता, तब तक अविश्वास का वातावरण पूरी तरह समाप्त नहीं हो सकता। सैनिकों की भारी उपस्थिति सदैव एक अंतर्निहित तनाव को बनाए रखती है, जहाँ एक छोटी सी मानवीय चूक भी बड़े विवाद का कारण बन सकती है।

दूसरी बड़ी चुनौती सीमांत क्षेत्रों में हो रहा व्यापक ढांचागत विकास है। हाल के वर्षों में दोनों देशों ने सीमा के पास बारहमासी सड़कों, सुरंगों, पुलों, आधुनिक बंकरों और हवाई पट्टियों का तेजी से निर्माण किया है। बुनियादी ढांचे का यह विकास दोनों पक्षों की अपनी सीमाओं की रक्षा करने की सामरिक तत्परता को तो बढ़ाता है, लेकिन साथ ही यह एक निरंतर रणनीतिक प्रतिस्पर्धा को भी जन्म देता है। जब सीमा पर दोनों सेनाओं की रसद और सैन्य पहुँच की गति कई गुना बढ़ जाती है, तो किसी भी संकट के समय प्रतिक्रिया का समय बहुत कम रह जाता है। इसलिए नए संवाद माध्यमों की प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करेगी कि वे इस तेज गति वाले सैन्य परिवेश में कितनी कुशलता से काम करते हैं।

तीसरी चुनौती संधियों और प्रोटोकॉल के ईमानदारी से पालन की है। अतीत के अनुभव यह स्पष्ट करते हैं कि समझौतों का होना एक बात है और जमीनी स्तर पर गश्ती दलों द्वारा उनका अक्षरशः पालन किया जाना दूसरी बात है। विश्वास की पुनः स्थापना केवल कागजी घोषणाओं से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए दोनों ओर के फील्ड कमांडरों को अपने दृष्टिकोण में संयम और परिपक्वता दिखानी होगी। पूर्व में स्थापित बफर जोन और गश्त से जुड़े नियमों की स्पष्ट समझ दोनों पक्षों के निचले स्तर के सैनिकों तक पहुंचनी चाहिए ताकि किसी भी प्रकार के संशय की गुंजाइश न रहे।

भू-राजनीतिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो भारत और चीन के बीच सीमा पर शांति का बना रहना केवल इन 2 देशों के हित में ही नहीं है, बल्कि संपूर्ण एशिया और वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। 21वीं सदी में दुनिया पहले से ही अनेक युद्धों, आर्थिक अनिश्चितताओं और आपूर्ति श्रृंखला के संकटों से जूझ रही है। ऐसे दौर में 2 विशाल जनसंख्या वाले परमाणु संपन्न पड़ोसियों के बीच सीधा सैन्य टकराव वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत विनाशकारी सिद्ध हो सकता है। सीमा पर तनाव कम करने की यह नई सहमति यह संदेश देती है कि दोनों देश अपने गहरे रणनीतिक मतभेदों के बावजूद आर्थिक और क्षेत्रीय स्थिरता के व्यापक महत्व को समझते हैं।

भारत के लिए अपनी संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करना सर्वोच्च राष्ट्रीय प्राथमिकता है, जिससे कभी कोई समझौता नहीं किया जा सकता। भारत ने हमेशा इस बात पर बल दिया है कि सीमा पर अमन-चैन और स्थिरता ही द्विपक्षीय संबंधों के सामान्य होने की पहली पूर्व-शर्त है। साथ ही, एक जिम्मेदार राष्ट्र के रूप में भारत ने सदैव शांतिपूर्ण संवाद और कूटनीतिक बातचीत के रास्तों को खुला रखा है। नई संचार रेखाओं और बैठक बिंदुओं की स्थापना भारत की इसी संतुलित नीति का प्रमाण है, जहाँ एक ओर सैन्य स्तर पर पूरी सतर्कता और तैयारी रखी जा रही है, वहीं दूसरी ओर कूटनीति के माध्यम से तनाव को शांत करने के हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि 2 नई सीधी संपर्क रेखाओं और 2 अतिरिक्त सीमांत बैठक बिंदुओं पर बनी सहमति भारत-चीन सीमा प्रबंधन की दिशा में एक अत्यंत विवेकपूर्ण और स्वागत योग्य कदम है। यह पहल सीमा पर सैनिकों के बीच आकस्मिक टकराव के जोखिम को कम करेगी, गलतफहमियों को समय रहते दूर करेगी और दोनों पक्षों को शांतिपूर्ण संवाद का एक मजबूत मंच प्रदान करेगी। फिर भी, इस व्यवस्था को वास्तविक सफलता तभी माना जाएगा जब यह अग्रिम मोर्चों से सेनाओं की वास्तविक और सत्यापन योग्य वापसी का मार्ग प्रशस्त करे तथा दोनों देशों के बीच सीमा के स्थायी, निष्पक्ष और परस्पर सम्मानजनक समाधान की नींव तैयार कर सके।

क्या एप्पल साइडर विनेगर सेहत को पहुंचाता है नुकसान?

एप्पल साइडर विनेगर का ट्रेंड तेजी से बढ़ रहा है। परफेक्ट फिगर से लेकर चमकदार स्किन पाने के लिए लोग इसका सेवन कर रहे हैं। एप्पल साइडर विनेगर को कुछ लोग वजन कम करने के लिए सुबह-सवेरे खाली पेट भी पी रहे हैं। लेकिन क्या आप जानती हैं रोजाना एप्पल साइडर विनेगर का सेवन करना आपकी सेहत को नुकसान पहुंचा सकता है। एप्पल साइडर विनेगर का लंबे समय तक सेवन करने से आपकी हेल्थ को धीरे-धीरे नुकसान पहुंचा सकता है। क्योंकि एप्पल साइडर विनेगर में बहुत ही स्ट्रांग एसिड होता है, जिसका लिमिट से ज्यादा सेवन नुकसानदायक हो सकता है। अगर आपको एप्पल साइडर विनेगर का फायदा लेना है तो उसका सेवन पर्याप्त मात्रा में ही करने की सलाह दी जाती है। एप्पल साइडर विनेगर के नुकसान क्या-क्या हैं?

दांतों की समस्या

एप्पल साइडर विनेगर बहुत ही ज्यादा एसिडिक होता है, यह ऐसे तो नुकसादायक नहीं लगता है। लेकिन इसका हद से ज्यादा सेवन करना आपके दांत खराब कर सकता है। दांतों पर एक लेयर होती है, जो लिमिट से ज्यादा एप्पल साइडर विनेगर का सेवन करने से हट सकती है। लेयर हटने से दांतों में सेंसटिविटी और सड़न जैसी समस्या हो सकती है। अगर आपको अपने दांतों से प्यार है तो एप्पल साइडर विनेगर को पानी में मिलाकर और स्ट्रा से पी सकते हैं।

दवाइयों पर असर

अगर आपकी किसी तरह की दवा चल रही है, तो एप्पल साइडर विनेगर का सेवन करते समय ज्यादा सावधानी की जरूरत है। क्योंकि इसमें मौजूद एसिड, दवाइयों के असर पर प्रभाव डाल सकता है। जिससे अन्य स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। अगर आप किसी तरह की दवा ले रही हैं और एप्पल साइडर विनेगर को भी अपने रूटीन में शामिल करने के बारे में सोच रही हैं तो पहले डॉक्टर की सलाह अवश्य ले लेनी चाहिए।

पेट की समस्या

एप्पल साइडर विनेगर को डाइजेशन के लिए अच्छा माना जाता है, लेकिन इसका लिमिट से ज्यादा सेवनपेट की समस्या हो सकती है। बहुत ज्यादा मात्रा में एसिड का सेवन करने से आपके पेट में जलन हो सकती है। खासकर, अगर आपका गट सेंसिटिव, खट्टे डकार या एसिडिटी की समस्या रहती है तो एप्पल साइडर विनेगर को एक लिमिट में ही लेना चाहिए।

स्किन इरिटेशन

एप्पल साइडर विनेगर का स्किन केयर ट्रीटमेंट्स में भी इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन, इसे स्किन पर डायरेक्ट लगाने से बचना चाहिए क्योंकि इससे जलन और इरिटेशन की समस्या हो सकती है। स्किन के लिए एसिड बहुत हार्ड हो सकता है, ऐसे में इसे डायलियूट करके ही लगाएं। अगर आप एप्पल साइडर विनेगर का टोनर या एक्ने पर इस्तेमाल कर रही हैं, तो पहले थोड़े एरिया पर लगाकर चेक करें।

हड्डियों पर असर

क्या आप जानती हैं एप्पल साइडर विनेगर का बहुत ज्यादा सेवन करने से आपकी हड्डियों पर असर पड़ सकता है? एप्पल साइडर विनेगर का लिमिट से ज्यादा सेवन, शरीर में पोटेशियम की मात्रा को कम करने से लिंक हो सकता है जिसकी वजह से बोन डेनसिटी भी समय के साथ कम हो सकती है। ऐसे में एप्पल साइडर विनेगर का लिमिट में ही सेवन करना चाहिए।

एप्पल साइडर विनेगर के फायदे अनेक हैं, लेकिन किसी भी चीज का अति में सेवन करना सेहत को नुकसान पहुंचा सकता है। ऐसे में एप्पल साइडर विनेगर को अपनी डाइट में शामिल करने से पहले उसके फायदे और नुकसान, दोनों के बारे में जान लेना चाहिए। अगर आपको एप्पल साइडर विनेगर का सेवन करने से किसी तरह का रिएक्शन होता है, तो तुरंत डॉक्टर की सलाह लेनी चाहिए।

नसों से जुड़ी समस्या है वैरिकोज वेंस या स्पाइडर वेंस

वैरिकोज वेंस या स्पाइडर वेंस नसों से जुड़ी समस्या है। वैरिकोज वेंस ज्यादातर लोगों के लिए खतरनाक नहीं होती हैं लेकिन कई बार ये गंभीर बीमारियों का कारण बन सकती हैं। वैरिकोज वेंस हाथ, पैर, एड़ी, टखने और पंजों में ज्यादा दिखाई देती हैं। इस स्थिति में नीली नसें या नसों के गुच्छे साफ नजर आने लगते हैं। अधिकतर मामलों में लोगों को वैरिकोज वेंस की समस्या में दर्द नहीं होता है लेकिन कई लोगों के लिए यह दर्द, खड़े होने में परेशानी और जलन जैसी परेशानी की वजह हो सकती है। अगर आपको भी वैरिकोज वेंस की समस्या है, तो अपने लाइफस्टाइल में कुछ बदलाव करके आप इस समस्या से राहत पा सकती हैं।

वैरिकोज वेंस या स्पाइडर वेंस नसों से जुड़ी समस्या है। वैरिकोज वेंस ज्यादातर लोगों के लिए खतरनाक नहीं होती हैं लेकिन कई बार ये गंभीर बीमारियों का कारण बन सकती हैं। वैरिकोज वेंस हाथ, पैर, एड़ी, टखने और पंजों में ज्यादा दिखाई देती हैं। इस स्थिति में नीली नसें या नसों के गुच्छे साफ नजर आने लगते हैं। अधिकतर मामलों में लोगों को वैरिकोज वेंस की समस्या में दर्द नहीं होता है लेकिन कई लोगों के लिए यह दर्द, खड़े होने में परेशानी और जलन जैसी परेशानी की वजह हो सकती है। कई बार इन नसों में ब्लीडिंग भी हो जाती है। वैरिकोज वेंस के कारण क्या हैं और किन आसान तरीकों की मदद से इन्हें मैनेज किया जा सकता है। इस बारे में हमने डाइटीशियन, पब्लिक हेल्थ एक्सपर्ट से बात की और उनसे इसे मैनेज करने के कुछ टिप्स जानें।

वैरिकोज वेंस के कारण

- लंबे वक्त तक खड़े रहना
- वजन अधिक होना
- प्रेग्नेंसी
- नसों पर अधिक दबाव
- हार्मोनल इंबैलेंस
- बढ़ती उम्र

इस बात का ख्याल

पुराने वक्त में घरों में खाना बनाने के लिए चूल्हे का प्रयोग होता था। महिलाएं बैठकर खाना बनाती थी लेकिन आज के वक्त में खड़े रहकर ही खाना बनाया जाता है। ये भी वैरिकोज वेंस की एक बड़ी वजह है। जब महिलाएं बैठकर खाना बनाती थी तो वे लंबे वक्त तक खड़ी नहीं रहती थी जिससे वैरिकोज वेंस की समस्या कम देखने को मिलती थी। इससे पेल्विक मसल्स को भी फायदा होता था।

इन टिप्स को करें फॉलो

- अगर आपको वैरिकोज वेंस की समस्या है तो कुछ आसान टिप्स को फॉलो करके आप इसे मैनेज कर सकती हैं।
- लंबे समय तक खड़ी ना रहें। कुछ देर खड़ी रहने के बाद बैठ जाएं।
- पैरों पर अधिक प्रेशर न डालें।
- अगर आपका वजन अधिक है तो इसे कम करने की कोशिश करें।
- ज्यादा पानी पिएं।
- अपनी डाइट में ताजे फल और सब्जियों को शामिल करें।
- डॉक्टर से सलाह लेकर कम्प्रेशन स्टॉकिंग्स पहनें। इससे वैरिकोज वेंस को बढ़ने से रोका जा सकता है।
- अगर समस्या ज्यादा है तो डॉक्टर से ट्रीटमेंट जरूर करवाएं।

वैरिकोज वेंस होने पर न करें ये 5 काम, बढ़ सकती है मुश्किल

वैरिकोज वेंस या स्पाइडर वेंस नसों से जुड़ी समस्या है। यह कई कारणों से हो सकती हैं। अगर आपको यह समस्या है, तो कुछ कामों को करने से बचें वरना आपकी मुश्किल बढ़ सकती है।

वेरिकोज वेंस के बारे में काफी लोग नहीं जानते हैं। लेकिन, यह नसों से जुड़ी एक समस्या है। आपने कुछ लोगों के हाथ, पैर, एड़ी, पंजे या टखनों में नीली नसे या नसों के गुच्छे देखे होंगे। ये वेरिकोज वेंस होती हैं। इन्हें स्पाइडर वेंस भी कहा जाता है। इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं और यह समस्या पुरुषों से ज्यादा महिलाओं में देखने को मिलती है। आमतौर पर इनसे कोई खतरा नहीं होता है। लेकिन, कई बार ये मुश्किल खड़ी कर सकती हैं। इनकी वजह से कई बार, टांगों में खून की सप्लाई पर असर होता है। कई लोगों को इनकी वजह से खड़े होने में परेशानी हो सकती है। वहीं, कई बार इनमें दर्द और जलन भी होती है। अगर आपको यह समस्या है, तो आपको कुछ कामों को पूरी तरह अवॉइड करना चाहिए।

वेरिकोज वेंस होने पर बिल्कुल न करें ये काम

- अगर आपको वेरिकोज वेंस की समस्या है, तो ज्यादा देर बिल्कुल खड़े न रहें। इससे आपकी दिक्कत बढ़ सकती है। ज्यादा देर खड़े रहने के कारण, नसों में खून जमने लगता है इससे नसों पर अधिक प्रेशर पड़ता है।
- वेरिकोज वेंज होने पर, आप भारी वजन न उठाएं। दरअसल, भारी वजन उठाने से नसों पर दबाव पड़ता है और इससे नसों में खिंचाव पैदा होता है। इसकी वजह से नसे कमजोर होने लगती हैं। ऐसा नहीं हैं कि आप बिल्कुल वजन नहीं उठा सकती हैं। लेकिन, अधिक भारी चीजों को उठाने से बचें।
- हाई हील्स वाले सैंडिल न पहनें। इससे ब्लड फ्लो बाधित होता है और नसों पर दबाव पड़ता है।
- वेरिकोज वेंस होने पर, आपको मुलायम और आरामदायक चप्पले पहननी चाहिए।
- अगर आपको वेरिकोज वेंस हैं, तो आपको इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि आपको कब्ज न हो। अगर आपका पेट ठीक से साफ नहीं हो रहा है, आपको कब्ज है, तो इसकी वजह से पेट साफ होने पर नसों पर दवाब आता है और परेशानी बढ़ सकती है।
- अधिक कठोर या खुरदुरी जगह पर न चलें। इससे भी नसों पर प्रेशर आता है।

ट्रेवल के दौरान खराब नहीं होगा डाइजेशन अपनाएं ये टिप्स

क्या ट्रेवलिंग के दौरान आपका भी पेट गड़बड़ हो जाता है,गैसे और कब्ज से परेशान हो जाते हैं तो आप इन टिप्स को फॉलो करके इसमें आराम पा सकते हैं।

ट्रेवल करना मजेदार और रोमांच से भरा होता है, लेकिन अक्सर ट्रैवलिंग के दौरा पेट साथ नहीं देता है, अक्सर लोगों को एसिडिटी, कब्ज, जैसी दिक्कत हो जाती है जिसके कारण सफर का मजा किरकिरा हो जाता है, फ्रेशनेस महसूस नहीं होती है। अगर आपके साथ भी ऐसा होता है तो हम आपको एक्सपर्ट के बताए कुछ टिप्स बता रहे हैं जिसे फॉलो करने से ट्रेवलिंग के दौर आपको दिक्कत नहीं होगी

- ट्रैवल के दौरान डाइजेशन को सही रखना है तो खाली पेट कैफ़ीन का सेवन करने से बचें, इससे एसिडिटी बढ़ाने की संभावना रहती है।
- रात को सोते वक्त नाभि में तेल जरूर लगाएं, इससे मेटाबॉलिज्म में सुधार होता है। पाचन बेहतर होता है और गैस की समस्याएं कम होती है। यह एक बेहद सरल और प्रभावी उपाय है।
- सूर्य नमस्कार करना ना भूलें, इससे न सिर्फ फिटनेस को बढ़ावा मिलता है बल्कि आपके पाचन तंत्र को भी सक्रिय करने में मदद मिलती है। यह पेट के अंगों में रक्त प्रवाह को बढ़ाता है और पाचन क्रिया को मजबूत करता है।
- रोज सुबह एक चम्मच शहद का सेवन करें, यह नेचुरल लैक्सेटिव गुणों वाला होता है जो कब्ज और गैस की समस्याओं में मदद करता है।
- ट्रेवल के दौरान ठंडा खाना खाने से बचें, ठंडा खाद्य पदार्थ पाचन को धीमा कर सकते हैं, कोशिश करें कि आपके भोजन का तापमान सामान्य गर्म हो ताकी पाचन प्रक्रिया सुचारू बनी रहे।
- फलों और दूध को एक साथ ना खाएं, इससे ब्लोटिंग और असुविधा हो सकती है। फल जल्दी पचते हैं जबकि दूध में अधिक समय लगता है।
- सोने से पहले वज्रासन में जरूर बैठें, इससे पेट पर दबाव पड़ता है जो पाचन अंगों को सक्रिय करता है और भोजन को सही से पचने में मदद करता है।
- रात को सोने से पहले कैफीन का सेवन न करें, इससे आपकी नींद खराब हो सकती है और पाचन में बाधा आ सकता है।
- रात का खाना जल्दी खाने से आपके शरीर को भोजन पचाने के लिए पर्याप्त समय मिलता है। इसे पोषक तत्वों का बेहतर अवशोषण होता है और असुविधा की संभावना कम होती है।

उम्र बढ़ने के साथ कमजोर होने लगती है पास की नजर

प्रेसबायोपिया यानी पास की नजर का कमजोर होना है। यह बीमारी उम्र के साथ होने वाले सामान्य बदलाव के कारण होती है जोकि 40 की उम्र के बाद देखने को मिलती है। हालांकि मोबाइल फोन और इसी तरह के अन्य गैजेट्स के इस्तेमाल करने से कई बार यह बीमारी उम्र से पहले ही नजर आने लगती है। इसमें नजर को पास में केंद्रित कर पाने में परेशानी होती है। खासकर छोटे अक्षरों और कम रोशनी में। शुरू में तो व्यक्ति मोबाइल या किताब को दूर कर पढ़ लेता है लेकिन बाद में दिखाई नहीं देता है।

कारण - इसका मुख्य कारण उम्र का अधिक होना है। यह बीमारी 40वर्ष से अधिक उम्र के लोगों में आम है, लेकिन मोबाइल, कम्प्यूटर और टेबलेट्स के अत्यधिक इस्तेमाल से लोगों को जल्द ही चश्मा लग जाता है। एस्टीमैटिज्म (दृष्टिवैषम्य), नियरसाइटेडनेस (निकटदृष्टि दोष) और फारसाइटेडनेस (दूरदृष्टि दोष) के रूप में प्रेसबायोपिया में अंतर पाया जा सकता है, जो कि आंखों की पुतलियों के आकार से संबंधित है और आनुवांशिक व पर्यावरणीय कारणों से होते हैं।

लक्षण-इलाज - प्रेसबायोपिया के मरीजों को नजदीक का काम करने जैसे कढ़ाई या हाथों से लिखने पर सिरदर्द, आंखों पर दबाव या थकान महसूस होने लगता है। अगर बीमारी की पहचान शुरुआती चरण में हो जाती है तो दिनचर्या में कुछ बदलाव कर इसको नियंत्रित किया जाता है, लेकिन बीमारी बढने पर सर्जरी की जाती है। इसके लिए कंडक्टिव कैरेटोप्लास्टी या कॉर्नियल इन-लेज आदि सर्जरी की जाती है।

चश्मा - बायफोकल या प्रोग्रेसिव लैंस लगे चश्मे प्रेसबायोपिया में सुधार के लिए सबसे अच्छे होते हैं। बायफोकल का मतलब है, जिसमें दो फोकस होते हैं। चश्मे के लैंस का प्रमुख भाग दूरदृष्टि दोष के सुधार के लिए होता है जबकि लैंस का निचला हिस्सा निकट दृष्टि दोष के लिए होता है। प्रोग्रेसिव प्रकार के लैंस बायफोकल लैंस के समान होते हैं लेकिन उनके बीच कोई लकीर नजर नहीं आती। इसको पहन सकते हैं।

जांचें - इसकी जांच भी आंखों की दूसरी बीमारियों की तरह ही होती है। डॉक्टर, पहले आंखों में दवा डालकर पुतलियों को फैलाते हैं। इसके बाद तेज रोशनी में आंखों की जांच करते हैं। इस प्रक्रिया में करीब एक घंटे का समय लगता है। इसके अलावा भी डॉक्टर कुछ अन्य टैस्ट भी करवाते हैं।

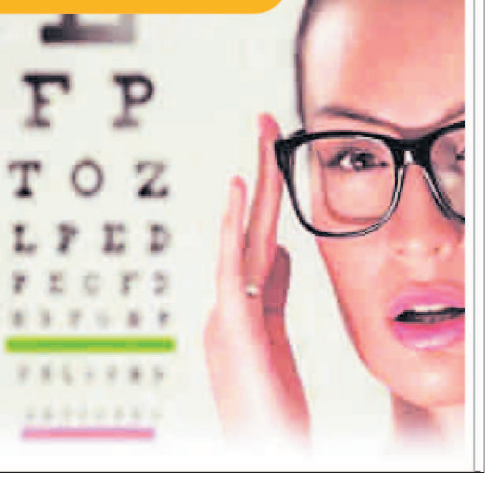

ब्लैक ड्रेस में नीरू ने ढाया कहर

नीरू बाजवा जब भी अपने फैशन लुक की तस्वीरें साझा करती हैं, उनके चाहने वालों का ध्यान आसानी से खिंच जाता है। इस बार भी कुछ ऐसा ही देखने को मिला। नीरू ने काले रंग की खूबसूरत ऑफ-शोल्डर ड्रेस पहनी है, जिसमें वह बेहद आकर्षक नजर आ रही हैं। ड्रेस का डिजाइन सादा होने के बावजूद काफी स्टाइलिश है। इसका छोटा आकार और फिटिंग उनके पूरे लुक को खास बना रहा है।

पूरे लुक में सबसे ज्यादा ध्यान खींचने वाली चीज उनका पिंक बैग है। काली ड्रेस के साथ हल्के गुलाबी रंग का बैग काफी खूबसूरत लग रहा है। यह बैग उनके पहनावे में एक अलग रंग जोड़ता है और पूरे लुक को ज्यादा आकर्षक बनाता है।खास बात यह है कि नीरू ने बैग को हाथ में लेकर तस्वीरों के लिए पोज दिया है। काले और गुलाबी रंग का यह मेल फैशन पसंद करने वाली महिलाओं को भी काफी पसंद आ सकता है। अगर आप भी काली ड्रेस को थोड़ा अलग अंदाज देना चाहती हैं, तो उसके साथ हल्के रंग का बैग इस्तेमाल कर सकती हैं।नीरू की ड्रेस पर लगा सफेद फूल भी उनके लुक की खासियत रहा। काले कपड़े पर सफेद फूल काफी अलग और सुंदर नजर आ रहा है। इस छोटे से फूल ने उनके पहनावे में एक खूबसूरत बदलाव किया। काला, गुलाबी और सफेद रंग एक साथ मिलकर उनके लुक को संतुलित बना रहे हैं। यही वजह है कि बिना बहुत ज्यादा गहने या दूसरी चीजें जोड़े भी उनका पूरा अंदाज काफी शानदार दिखाई दे रहा है।नीरू ने इस लुक के साथ मेकअप को भी ज्यादा भारी नहीं रखा। उनके चेहरे पर हल्का और साफ मेकअप नजर आ रहा है। आंखों को खूबसूरती से उभारा गया है, जबकि होंठों पर गुलाबी रंग की हल्की छाप दिखाई देती है। कानों में छोटे और खूबसूरत झुमके उनके लुक के साथ अच्छे लग रहे हैं। बालों को पीछे बांधने से उनकी ज्वेलरी और चेहरे की खूबसूरती और ज्यादा साफ दिखाई दे रही है। उनका यह अंदाज बताता है कि ग्लैमरस दिखने के लिए हमेशा बहुत ज्यादा सजने की जरूरत नहीं होती। नीरू बाजवा का यह अंदाज पार्टी या किसी खास मौके के लिए अच्छा फैशन विचार दे सकता है। अगर आपके पास काली ड्रेस है, तो उसके साथ गुलाबी या किसी हल्के रंग का बैग लेकर आप अपने लुक में थोड़ा रंग जोड़ सकती हैं। वहीं, सफेद फूल जैसी छोटी चीज पूरे पहनावे को अलग पहचान दे सकती है।

सामंथा रुथ प्रभु प्रेग्नेंसी में कर रही है ये मुश्किल काम, बोली- कॉपी मत करना

हाल ही में सामंथा रुथ प्रभु अपने पति राज निदिमोरु के साथ मस्ती करती नजर आई थीं, जिसके बाद अब उनका एक नया वीडियो सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बन गया है। हाल ही में सामंथा रुथ प्रभु अपने पति राज निदिमोरु के साथ मस्ती करती नजर आई थीं, जिसके बाद अब उनका एक नया वीडियो सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बन गया है। हाल ही में सामंथा रुथ प्रभु अपने पति राज निदिमोरु के साथ मस्ती करती नजर आई थीं, जिसके बाद अब उनका एक नया वीडियो सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बन गया है। साउथ सिनेमा की जानी-मानी एक्ट्रेस सामंथा रुथ प्रभु इन दिनों अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर लगातार सुर्खियों में बनी हुई हैं। वह सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं और अपनी जिंदगी से जुड़े पल अक्सर फैंस के साथ शेयर करती रहती हैं। कभी उनकी तस्वीरें तो कभी उनके वीडियो इंटरनेट पर आते ही छा जाते हैं। हाल ही में वह अपने पति राज निदिमोरु के साथ मस्ती करती नजर आई थीं, जिसके बाद अब उनका एक नया वीडियो सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बन गया है।सामंथा रुथ प्रभु ने अपने आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट पर जिम का एक बिहाइंड द सीन्स वीडियो शेयर किया है। इस वीडियो में एक्ट्रेस जमकर स्ट्रेंथ ट्रेनिंग करती हुई दिखाई दे रही हैं, जिसमें वे भारी वजन के साथ डेडलिफ्ट करती नजर आ रही हैं। इस वीडियो को देखने के बाद उनके फैंस और सोशल मीडिया यूजर्स हैरान रह गए हैं, क्योंकि प्रेग्नेंसी के दौरान इस तरह का भारी वर्कआउट करना आसान नहीं होता। उनका यह वीडियो इंटरनेट पर आते ही तेजी से वायरल हो गया है।फैंस की चिंता को दूर करने और किसी भी तरह की गलतफहमी से बचने के लिए सामंथा ने इस वीडियो के साथ एक लंबा कैप्शन भी लिखा है। उन्होंने अपनी बात रखते हुए लिखा, एक छोटी सी बात साफ कर दूं, मैं सालों से स्ट्रेंथ ट्रेनिंग करती आ रही हूं और डॉक्टर की अनुमति के साथ ही इसे अपनी प्रेग्नेंसी में भी जारी रखा है। उन्होंने यह भी बताया कि उनके ट्रेनर प्रेग्नेंसी ट्रेनिंग में खास तौर पर सर्टिफाइड हैं।सामंथा ने अपने कैप्शन में आगे लिखा कि वीडियो में जो कुछ भी दिखाया जा रहा है, उसे उनके शरीर, उनके निजी अनुभव और उनकी प्रेग्नेंसी की स्थिति के अनुसार ही डिजाइन और मॉडिफाई किया गया है। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि हर महिला की प्रेग्नेंसी अलग होती है और सबके शरीर की जरूरतें भी भिन्न होती हैं। इसलिए उनके इस वर्कआउट रूटीन को कोई भी महिला अपनी गाइड या मानक न माने। गर्भावस्था के दौरान किसी भी तरह की एक्सरसाइज या फिटनेस रूटीन शुरू करने से पहले हमेशा अपने डॉक्टर से परामर्श अवश्य करना चाहिए।सामंथा रुथ प्रभु के इस प्रेरणादायक और फिटनेस से भरपूर वीडियो पर फैंस जमकर प्यार लुटा रहे हैं। कमेंट सेक्शन में लोग उनकी मेहनत, अनुशासन और फिटनेस के प्रति समर्पण की तारीफ कर रहे हैं। साथ ही, जिस समझदारी के साथ उन्होंने अपनी प्रेग्नेंसी और वर्कआउट पर सफाई दी है, उसकी भी लोग सराहना कर रहे हैं। सामंथा का यह अंदाज एक बार फिर साबित करता है कि वह अपनी सेहत और फिटनेस को लेकर कितनी जागरूक और सजग रहती हैं।

करीना के डेब्यू सीन को याद कर बोलीं करिश्मा- तभी तय था सुपरस्टार बनना

बॉलीवुड स्टार करिश्मा कपूर ने हाल ही में अपनी छोटी बहन करीना कपूर की डेब्यू फिल्म 'रिफ्यूजी' के बारे में बात की। फिल्म से करीना के पहले क्लोज-अप को याद करते हुए, करिश्मा ने कहा कि उन्हें तुरंत एहसास हो गया था कि करीना का सुपरस्टार बनना तय है। करिश्मा ने बताया कि डायरेक्टर जे.पी. दत्ता, जिन्होंने करीना को रिफ्यूजी से लॉन्च किया था, पहले उनके पिता, एक्टर रणधीर कपूर के असिस्टेंट के तौर पर काम कर चुके थे। शूटिंग के दौरान सेट पर जाने को याद करते हुए, उन्होंने कहा, फिर जब उन्होंने रिफ्यूजी फिल्म की, तो बहुत दिलचस्प कहानी है। क्योंकि जेपी दत्ता सर मेरे पिता के असिस्टेंट थे, और फिर जेपी दत्ता सर ने करीना को लॉन्च किया। यह ऐसा था जैसे इतिहास बन रहा हो। उन्होंने आगे कहा, फ्तो मुझे याद है हम गए थे वहाँ, शूटिंग चल रही थी। करीना का जो पहला क्लोज-अप हुआ था, जब बुर्का पहनती है। आप बस देख सकते थे कि वह सुपरस्टार बनने वाली थी। मुझे लगता है कि उनकी जो आँखें हैं, कैसे वो एक्सप्रेस करती हैं, यह दूसरे लेवल पर है।फिर जब उन्होंने रिफ्यूजी की, तो एक बहुत ही दिलचस्प कहानी है। जे.पी. दत्ता सर बहुत पहले मेरे पिता के असिस्टेंट थे, और बाद में उन्होंने करीना को लॉन्च किया। ऐसा लगा जैसे इतिहास पूरा हो गया हो। मुझे याद है जब शूटिंग चल रही थी तो हम वहाँ गए थे। करीना का पहला क्लोज-अप तब था जब उन्होंने अपना बुर्का उठाया था, और आप बस देख सकते थे कि वह सुपरस्टार बनने वाली थीं। मुझे लगता है कि जिस तरह से उनकी आँखें इमोशन दिखाती हैं वह दूसरे लेवल पर है) करिश्मा ने यह भी बताया कि बड़े होते समय बहनें अपनी पर्सनैलिटी के मामले में कितनी अलग थीं।

सुकेश संग नाम जुड़ने पर छलका नोरा का दर्द

बताया कैसे बर्बाद हुआ करियर

बॉलीवुड की जानी-मानी एक्ट्रेस और शानदार डांसर नोरा फतेही इन दिनों अपनी पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ को लेकर फिर से सुर्खियों में हैं। हाल ही में एक पॉडकास्ट के दौरान नोरा ने अपनी जिंदगी के सबसे काले और कठिन दौर के बारे में खुलकर बात की। उन्होंने उस मुश्किल समय को याद किया जब उनका नाम 200 करोड़ रुपये के कथित ठगी और मनी लॉन्ड्रिंग मामले के मुख्य आरोपी सुकेश चंद्रशेखर से जुड़ गया था। इस विवाद ने उनकी जिंदगी को झकझोर कर रख दिया था और उनके करियर पर भी गहरा असर डाला था।ड्रीम विद डॉ. शीन पॉडकास्ट में बातचीत करते हुए नोरा फतेही ने बताया कि वह अपनी जिंदगी के उस दौर को कभी नहीं भूल सकतीं। इस पूरे मामले ने उन्हें अंदर से इतना डरा दिया था कि आज भी किसी बड़े इवेंट या सार्वजनिक कार्यक्रम में जाने से पहले उनके मन में एक अजीब सा डर बना रहता है कि आगे उनके साथ क्या होगा। नोरा का कहना है कि इस विवाद के दौरान उनके खिलाफ बड़े पैमाने पर झूठी कहानियां और अफवाहें फैलाई गईं, जिससे उनकी छवि को धूमिल करने की कोशिश की गई।नोरा ने राहत की सांस लेते हुए कहा कि उनकी मां और उनके कुछ करीबी दोस्त उन्हें बहुत अच्छी तरह जानते हैं, इसलिए वे इन अफवाहों के झांसे में नहीं आए। हालांकि, उन्होंने यह भी जोड़ा कि अगर वे लोग उन्हें व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते होते, तो शायद समाज में फैलाई जा रही उन झूठी बातों पर आसानी से यकीन कर लेते। इस पूरे विवाद का सबसे बड़ा खामियाजा उनके करियर को भुगतना

काम्या पंजाबी का छलका दर्द पहली शादी में झेली घरेलू हिंसा

टीवी एक्ट्रेस काम्या पंजाबी ने अपनी पहली शादी में घरेलू हिंसा झेलने का दर्दनाक अनुभव शेयर किया है. उन्होंने बताया कि वो चेहरे पर पड़े निशानों को मेकअप से छिपाया करती थीं. टीवी एक्ट्रेस काम्या पंजाबी अक्सर किसी न किसी वजह से सुर्खियों में रहती हैं. अब एक्ट्रेस एक बार फिर चर्चा में आ गई हैं और वजह है उनका लेटेस्ट इंटरव्यू. काम्या पंजाबी ने हाल ही में पहली बार अपनी पहली शादी को लेकर कई चौंकाने वाले खुलासे किए हैं. उन्होंने बताया कि शादी के दौरान उन्हें घरेलू हिंसा का सामना करना पड़ा था. हाल ही में सिद्धार्थ कन्नन के साथ बातचीत में काम्या ने बताया कि वो किस तरह अपने चेहरे के निशान मेकअप से छिपाकर बाहर जाती थीं. उन्होंने ये भी बताया कि पति के लगातार सवालों और पाबंदियों से वो किस कदर परेशान हो गई थीं और आखिरकार अपनी बेटी के सामने हुई एक घटना के बाद उन्होंने ये रिश्ता खत्म करने का फैसला किया. काम्या ने बताया कि उन्होंने 25 साल की उम्र में अपने पहले पति बिजनेसमैन बंटी नेगी से शादी की थी. दोनों करीब तीन साल तक रिलेशनशिप में रहे थे. हालांकि, शादी से पहले ही उनके रिश्ते में काफी परेशानियां थीं और दोनों के बीच अक्सर झगड़े होते थे. काम्या के माता-पिता ने भी उन्हें इस रिश्ते को लेकर समझाया था, लेकिन वो अपनी पहली मोहब्बत को छोड़ना नहीं चाहती थीं. उन्होंने कहा, हम शादी से पहले भी एक-दूसरे से नहीं बनती थी. हमें उस वक्त ही समझ जाना चाहिए था कि ये रिश्ता सही नहीं है. मेरे माता-पिता ने भी मुझे समझाया था, लेकिन पहला प्यार ऐसा होता है कि आपको लगता है यही वो इंसान है।

रकुल ने साझा की रामायण में शूर्पणखा बनने की वजह

एक्ट्रेस रकुल प्रीत सिंह, जो अपनी आने वाली बड़ी फ़िल्म %रामायण% की रिलीज़ का इंतज़ार कर रही हैं, ने फ़िल्म में शूर्पणखा के अपने रोल के बारे में कुछ बातें बताई हैं। रावण की बहन का रोल निभाने वाली इस एक्ट्रेस ने बताया कि उन्हें इस किरदार ने किस बात के लिए आकर्षित किया और उन्हें शूर्पणखा के उस पहलू को जानने का मौका मिला जो उसे सिर्फ़ एक विलेन के तौर पर दिखाए जाने से कहीं ज़्यादा है। फ़िल्म में अपने रोल के बारे में बात करते हुए एक्ट्रेस ने कहा, हर कुछ सालों में, आप इन किरदारों को अलग-अलग तरह से पेश होते और दिखाए जाते हुए देखते हैं, जबकि उनका मूल भाव वही रहता है जो असल कहानी में है। एक एक्टर के तौर पर, आप किरदार को इस नज़रिए से देखते हैं कि उसमें कई परतें हैं, और उसमें फ़िल्म में अपनी छाप छोड़ने की क्षमता और गुंजाइश है। वह ज़ाहिर तौर पर लंका की सबसे खूबसूरत महिला थीं। उनमें अहंकार था, लेकिन उनका व्यक्तित्व कई परतों वाला था। एक एक्टर के तौर पर, उन परतों को समझना मज़ेदार होता है। इस फ़िल्म में रणबीर कपूर, साई पल्लवी, रवि दुबे, यश और सनी देओल भी हैं। इस रोल ने रकुल को शूर्पणखा की ज़िंदगी के उन पहलुओं को जानने का मौका भी दिया जिनके बारे में उन्हें पहले पता नहीं था। उन्होंने आगे कहा, उनके बारे में बहुत सी ऐसी बातें थीं जो मुझे नहीं पता थीं। जब मैंने स्क्रिप्ट पढ़ी, तो मुझे उनकी ज़िंदगी के उस घटना से पहले और बाद के कई पहलुओं के बारे में पता चला, जिसमें लक्ष्मण ने उनकी नाक काट दी थी। उन्होंने कहा, शूर्पणखा की ज़िंदगी में क्या होता है और वह राम से कैसे मिलती हैं - ऐसी बहुत सी बातें थीं जो मुझे नहीं पता थीं, जो स्क्रिप्ट पढ़ते समय मेरे लिए नई थीं, और इसीलिए मुझे यह पसंद आया।रामायण- पार्ट 1% 6 नवंबर, 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज़ होगी।

टीबी जागरूकता अभियान अंतर्गत ग्राम करमतरा में ग्रामीणों को किया गया जागरूक

टीबी से संबंधित भ्रांतियों और सामाजिक भेदभाव को दूर करने और मरीजों के प्रति सहयोगात्मक व संवेदनशील व्यवहार रखने के लिए भी सभी को किया गया प्रेरित

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग तथा मेरा युवा भारत के माध्यम द्वारा ग्रामीणों में टीबी के प्रति जागरूकता बढ़ाने, समय पर जांच एवं उपचार के लिए प्रेरित करने तथा टीबी के प्रति फैली भ्रांतियों को दूर करने टीबी (क्षय रोग) जागरूकता अभियान अंतर्गत डोंगरगांव विकासखंड के ग्राम करमतरा में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में ग्रामीणों को टीबी रोग के लक्षण, बचाव, जांच एवं उपचार के संबंध में आवश्यक जानकारी दी गई।

मेरा युवा भारत की स्वयं सेविका श्रीमती रूपमाला साहू ने बताया कि दो सप्ताह या उससे अधिक समय तक खांसी रहना, बुखार आना, रात में पसीना आना, वजन कम होना, भूख कम लगना तथा कमजोरी महसूस होना टीबी के संभावित लक्षण हो सकते हैं। ऐसे लक्षण दिखाई देने पर व्यक्ति को बिना देरी किए स्वास्थ्य केंद्र में जांच कराना चाहिए। टीबी एक उपचार योग्य बीमारी है और नियमित रूप से चिकित्सकीय सलाह के अनुसार दवा लेने से मरीज स्वस्थ हो सकता है। इस दौरान टीबी से संबंधित भ्रांतियों एवं सामाजिक भेदभाव को दूर करने तथा मरीजों के प्रति सहयोगात्मक एवं संवेदनशील व्यवहार रखने के लिए भी सभी को प्रेरित किया गया। स्वास्थ्य विभाग एवं मेरा युवा भारत की टीम द्वारा किए जा रहे टीबी जागरूकता कार्यों के संबंध में जानकारी दी गई तथा टीबी मुक्त समाज बनाने में सभी से सहयोग एवं सहभागिता का आग्रह किया गया। कार्यक्रम में ग्रामीणों ने टीबी के संबंध में जानकारी प्राप्त की तथा अपने आसपास के लोगों को भी जागरूक करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में सरपंच, पंच, मितानिन, वरिष्ठ नागरिक, स्वास्थ्य एवं मेरा युवा भारत के माध्यम की टीम एवं बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे।

मोबाईल कैम्प का आयोजन - श्रमिकों को दी जा रही शासन की योजनाओं की जानकारी

श्रम विभाग द्वारा श्रमिकों की समस्याओं के समाधान के लिए एसओपी अंतर्गत जिले के नगरीय निकायों के वार्डों एवं ग्राम पंचायतों में मोबाईल कैम्प का आयोजन किया जा रहा है। मोबाईल कैम्प के माध्यम से श्रमिकों के कल्याण के लिए चलाए जा रहे शासन की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी जा रही है तथा पात्र आवेदक को योजनाओं से लाभान्वित करने आवेदन प्राप्त किए जा रहे है। इसी क्रम में आज छुरिया विकासखंड के ग्राम पंचायत मरकाकसा, नगर पंचायत डोंगरगांव के वार्ड क्रमांक 6 लालबहादुर शास्त्री वार्ड सेवताटोला एवं नगर पालिक निगम राजनांदगांव के लखोली वार्ड क्रमांक 35 में मोबाईल कैम्प का आयोजन किया जा रहा है। मोबाईल कैम्प के माध्यम से छत्तीसगढ़ असंगठित कर्मकार राज्य सामाजिक सुरक्षा मण्डल तथा छत्तीसगढ़ भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण मण्डल अंतर्गत श्रमिकों का पंजीयन एवं पंजीकृत श्रमिकों के नवीनीकरण हेतु आवेदन किया गया। साथ ही श्रमिक को योजनाओं से लाभान्वित करने के लिए एवं संशोधन हेतु आवेदन किया गया। ई-श्रम साथी एप में रजिस्ट्रेशन करने के साथ ही पंजीकृत हितग्राहियों का ई-केवायसी भी किया गया। सहायक श्रमायुक्त ने श्रमिकों से जिले में आयोजित मोबाईल कैम्पों में शामिल होकर नवीन श्रमिक पंजीयन एवं श्रमिक पंजीयन नवीनीकरण कराने के लिए आवेदन प्रस्तुत करने की अपील की है। मोबाईल कैम्पों में श्रम विभाग द्वारा श्रमिकों के कल्याण के लिए संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

खास खबर

दिव्यांग प्रमाणीकरण व यूडीआईडी निर्माण शिविर में दिव्यांगजनों का हुआ स्वास्थ्य परीक्षण

नई दृष्टिबिंदु / मोहला

कलेक्टर के मार्गदर्शन में दिव्यांगजनों को शासन की विभिन्न योजनाओं एवं सुविधाओं का लाभ सुगमता से उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मानपुर में जिला स्तरीय दिव्यांग प्रमाणीकरण एवं वउक्कऊ निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में जिला मेडिकल विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम द्वारा दिव्यांगजनों का स्वास्थ्य परीक्षण एवं दिव्यांगता का चिकित्सकीय परीक्षण किया गया। साथ ही दिव्यांगता प्रमाण-पत्र एवं वउक्कऊकार्ड निर्माण की प्रक्रिया भी पूरी की गई।

शिविर में विभिन्न श्रेणियों के कुल 110 दिव्यांगजनों का परीक्षण एवं प्रमाणीकरण किया गया। इनमें मानसिक रोग से संबंधित 8, श्रवण बाधित 11, अस्थि बाधित 67, सिक्ल सेल 2, मूक-बधिर 17 तथा दृष्टि बाधित 5 दिव्यांगजन शामिल रहे। शिविर के माध्यम से दिव्यांगजनों को एक ही स्थान पर आवश्यक चिकित्सकीय जांच, दिव्यांगता प्रमाण-पत्र तथा वउक्कऊकार्ड से संबंधित सुविधाएं उपलब्ध कराई गईं। इससे दिव्यांगजनों को शासन की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं एवं सुविधाओं का लाभ प्राप्त करने में सुविधा होगी।

जिला प्रशासन एवं संबंधित विभागों द्वारा दिव्यांगजनों को निर्धारित शिविरों में आवश्यक दस्तावेजों के साथ उपस्थित होकर इन सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। जिला मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी में मानपुर विकासखंड एवं उपखंड मुख्यालय के रूप में शामिल है, जहां आयोजित इस शिविर से क्षेत्र के दिव्यांगजनों को स्थानीय स्तर पर महत्वपूर्ण सुविधा मिली।

नर्मदा धाम भेड़नी से महाकाल मंदिर देवरबीजा तक निकली कांवड़ यात्रा में उमड़ा आस्था का जनसैलाब

बेमेतरा। जिला कांग्रेस कमेटी बेमेतरा के अध्यक्ष आशीष छाबड़ा के नेतृत्व में नर्मदा धाम भेड़नी से महाकाल मंदिर देवरबीजा तक आयोजित 9वीं वर्ष की भव्य कांवड़ यात्रा श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हुई। यात्रा में बड़ी संख्या में शिवभक्तों एवं श्रद्धालुओं ने शामिल होकर भगवान भोलेनाथ का जयघोष किया। नर्मदा मैया के पवित्र जल को कांवड़ में लेकर श्रद्धालुओं ने पैदल यात्रा करते हुए देवरबीजा पहुंचकर भगवान शिव का जलाभिषेक किया। यात्रा मार्ग में जगह-जगह श्रद्धालुओं के स्वागत एवं सेवा की व्यवस्था की गई, जिससे पूरे मार्ग में भक्तिमय और उत्साहपूर्ण वातावरण बना रहा। इस अवसर पर आशीष छाबड़ा ने कहा कि कांवड़ यात्रा केवल धार्मिक आस्था का पर्व नहीं, बल्कि सामाजिक एकता, सेवा और भाईचारे का भी प्रतीक है। नौ वर्षों से निरंतर आयोजित हो रही यह यात्रा क्षेत्र की धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपरा को मजबूत करने का कार्य कर रही है। उन्होंने यात्रा को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी कांवड़ यात्रियों, श्रद्धालुओं, आयोजन समिति, सेवा दल, कांग्रेस कार्यकताओं एवं क्षेत्रवासियों का आभार व्यक्त किया। हर-हर महादेव के जयघोष के साथ 9वीं वर्ष की कांवड़ यात्रा भव्यता और श्रद्धा के साथ संपन्न हुई। जिसमे बड़ी संख्या में श्रद्धालु जन उपस्थित रहे।

दिग्विजय स्टेडियम में 50 लाख खर्च के बाद भी मैदान बदहाल, कांग्रेस ने उठाए सवाल

मैदान के समतलीकरण और रख-रखाव में गंभीर अनियमितता व भ्रष्टाचार के आरोप लगाए

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

53 करोड़ रुपये की लागत से तैयार किए गए दिग्विजय स्टेडियम के मैदान की बदहाली को लेकर कांग्रेस ने प्रदेश सरकार और जिला प्रशासन पर तीखा हमला बोला है। शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष जितेंद्र मुदलियार के नेतृत्व में कांग्रेस नेताओं ने स्टेडियम मैदान का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान मैदान में करीब दो से तीन फीट तक गहरा गड्ढा मिलने के बाद कांग्रेस ने मैदान के समतलीकरण और रख-रखाव में गंभीर अनियमितता एवं भ्रष्टाचार के आरोप लगाए।

मुदलियार ने कहा कि मैदान को तैयार करने के लिए अब तक कई चरणों में राशि खर्च की जा चुकी है। सबसे पहले लोक निर्माण विभाग द्वारा मैदान तैयार किया गया। इसके बाद ठेकेदार के माध्यम से करीब 20 लाख रुपये खर्च कर घास लगाई गई। फिर डीएमएफ मद से करीब 16 लाख रुपये मैदान की मरम्मत पर खर्च किए गए। इसके बावजूद मैदान खेल आयोजनों के लिए पूरी तरह तैयार नहीं हो सका।

अब चौथी बार करीब 15 लाख रुपये खर्च किए जा रहे हैं। कांग्रेस ने सवाल उठाया कि जब लगातार लाखों रुपये खर्च हो रहे हैं तो मैदान की स्थिति में सुधार क्यों नहीं दिखाई दे रहा है? मैदान में हाईवा और ट्रैक्टर चलाए जा रहे हैं, जिससे भारी वाहनों के पहियों के कारण मिट्टी धंस रही है और जगह-जगह गड्ढे बन रहे हैं। ऐसे में रख-रखाव के नाम पर किए जा रहे दावों की वास्तविकता मैदान की हालत स्वयं बयां कर रही है।

उन्होंने आरोप लगाया कि दिग्विजय स्टेडियम समिति के सचिव और सह सचिव की देखरेख में मैदान की स्थिति लगातार बिगड़ रही है। इन दोनों ही पदों पर राजनीतिक लोग हैं जबकि इस पद पर खेल से जुड़े लोगों की नियुक्ति होनी चाहिए ताकि इसकी देखरेख सही तरीके से हो और सभी खेल के खिलाड़ियों को इसका लाभ मिले। मुदलियार ने कहा कि रियासतकालीन धरोहर दिग्विजय स्टेडियम राजनांदगांव के खिलाड़ियों की पहचान रहा है, लेकिन इसे तोड़कर जिस तरीके से बनाया गया है वह समस्या बन चुकी है। यहां न पार्किंग की ही व्यवस्था हो रही है और न खिलाडियों को सुविधाएं मिल रही है। इसलिए तत्काल राजनीतिक लोगों को समिति में पदो से हटाकर खिलाड़ियों को जिम्मेदारी सौंपी जाए।

कांग्रेस ने जिला प्रशासन और दिग्विजय स्टेडियम समिति के अध्यक्ष कलेक्टर से पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कराने की मांग की है। कांग्रेस ने कहा कि अब तक मैदान पर खर्च की गई प्रत्येक राशि का भौतिक सत्यापन, निर्माण एवं मरम्मत कार्यों की गुणवत्ता की तकनीकी जांच तथा जिम्मेदार अधिकारियों और संबंधित एजेंसियों की जवाबदेही तय की जानी चाहिए। कांग्रेस ने चेतावनी दी कि यदि सरकारी धन के उपयोग में अनियमितता सामने आती है तो जिम्मेदार लोगों के विरुद्ध कार्रवाई के लिए कांग्रेस आंदोलन को और तेज करेगी।

इस दौरान मामराज अग्रवाल, रुबी गरचा, राकेश जोशी, अशोक पंजवानी, विनय झा, ललित मरकाम, अमर झा, अमित कुशवाहा, ऋषि शास्त्री, आशीष साहू, जय जायसवाल, राहुल मरकाम सहित अन्य कांग्रेसजन मौजूद थे।

वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की प्रतिमा पर स्थापित किया भगवा ध्वज, जीर्णोद्धार के लिए निगम को पत्र लिखने की तैयारी

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की प्रतिमा स्थल के रखरखाव और साफ-सफाई को लेकर श्री राजपूत करणी सेना ने पहल की है। बुधवार को करणी सेना के पदाधिकारियों ने प्रतिमा परिसर में साफ-सफाई करने के बाद महाराणा प्रताप की प्रतिमा पर भगवा ध्वज स्थापित किया। इस दौरान पदाधिकारियों ने प्रतिमा स्थल की मौजूदा स्थिति का जायजा लिया और परिसर में हुई टूट-फूट तथा रखरखाव की कमी पर चिंता जताई। करणी सेना के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष संजय बहादुर सिंह ने कहा कि महाराणा प्रताप केवल राजपूत समाज ही नहीं, बल्कि शौर्य, स्वाभिमान और राष्ट्रभक्ति के प्रतीक हैं। ऐसे महापुरुष की प्रतिमा के आसपास का परिसर व्यवस्थित और साफ-सुथरा रहना चाहिए। प्रतिमा स्थल पर पर्याप्त रखरखाव नहीं होने से वहां की व्यवस्था प्रभावित हो रही है।

कार्यक्रम की शुरूआत प्रतिमा परिसर की साफ-सफाई से की गई। पदाधिकारियों और कार्यकताओं ने परिसर में फैली गंदगी को हटाया और आसपास के क्षेत्र को व्यवस्थित किया। इसके बाद वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की प्रतिमा पर भगवा ध्वज स्थापित किया गया। ध्वज स्थापना के दौरान पदाधिकारियों ने महाराणा प्रताप के शौर्य और स्वाभिमान को याद करते हुए उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प भी लिया।

सफाई के दौरान पदाधिकारियों ने प्रतिमा स्थल पर हुई टूट-फूट और रखरखाव की स्थिति को लेकर चिंता जाहिर की। श्री राजपूत करणी सेना के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष संजय बहादुर ने मामले की जानकारी स्थानीय पार्षद को टेलीफोन के माध्यम से दी। उन्होंने प्रतिमा स्थल की व्यवस्था में तत्काल सुधार कराने और आवश्यक मरम्मत कराने की मांग रखी।

करणी सेना के जिला अध्यक्ष अमन बहादुर सिंह ने कहा कि प्रतिमा स्थल के समुचित रखरखाव, साफ-सफाई और जीर्णोद्धार के लिए नगर निगम को पत्र लिखा जाएगा। इस अवसर पर प्रदेश सचिव गोल्डी भदोरिया, प्रदेश सह सचिव संतोष सिंह, प्रदेश उपाध्यक्ष, विवेक सिंह ठाकुर अध्यक्ष युवा 1282, जिला संयोजक कपिल सिंह, जिला उपाध्यक्ष अभिनव सिंह, जिला महामंत्री अजय कुशवाहा, संजय सिंह राजपूत, चंदन सिंह, परितोष सिंह, चंदन सिंह चंदेल, सुधीर सिंह, नीरज सिंह, हर्षवर्धन सिंह राजपूत आदि मौजूद रहे।

जिले में फॉस्टर केयर की ऐतिहासिक शुरूआत, बालक को मिला नया परिवार और सुरक्षित भविष्य

जिले का पहला सफल फॉस्टर केयर पुनर्वास बना बाल संरक्षण की मिसाल

नई दृष्टिबिंदु / मोहला

जिला मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी में बाल संरक्षण के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि दर्ज हुई है। जिला प्रशासन, महिला एवं बाल विकास विभाग तथा बाल कल्याण समिति के संयुक्त प्रयासों से जिले का पहला सफल फॉस्टर केयर (पोषण देखरेख) पुनर्वास पूरा किया गया है। इसके तहत एक बालक को संस्थागत देखरेख से निकालकर सुरक्षित एवं पारिवारिक वातावरण उपलब्ध कराया गया है।

कलेक्टर तनुजा सलाम के निर्देशन तथा जिला कार्यक्रम अधिकारी एवं जिला बाल संरक्षण अधिकारी के मार्गदर्शन में 1 जून से 30 जून 2026 तक सड़क जैसी परिस्थितियों में रहने वाले बच्चों के रेस्क्यू एवं पुनर्वास के लिए विशेष अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान श्रम विभाग, पुलिस विभाग और महिला एवं बाल विकास विभाग की संयुक्त टीम ने एक स्थानीय ढाबे से बालक का रेस्क्यू किया।

जांच में सामने आया कि बालक के माता-पिता एवं दादा-दादी का निधन हो चुका है। बालक को बाल कल्याण समिति के समक्ष प्रस्तुत करने के बाद तत्काल संरक्षण के लिए बालगृह भेजा गया। बालगृह में काउंसलिंग के दौरान बालक ने पारिवारिक वातावरण में रहने की इच्छा व्यक्त की।

इसके बाद जिला बाल संरक्षण इकाई के सामाजिक कार्यकर्ता, संरक्षण अधिकारी (गैर-संस्थागत देखरेख) तथा सेंटर ऑफ एक्सीलेंस इन अल्टरनेटिव केयर (इंडिया), दुर्ग संभाग के समन्वय से बालक के दूर के रिश्तेदारों से संपर्क कर काउंसलिंग की गई। रिश्तेदारों ने बालक के उज्ज्वल भविष्य के लिए उसे अपने परिवार में रखने की सहमति दी। जिला बाल संरक्षण इकाई द्वारा पोषण परिवार का गृह अध्ययन, साक्षात्कार एवं पात्रता सत्यापन किया गया। बालक का आधार कार्ड बनवाने सहित सभी आवश्यक विधिक औपचारिकताएं पूरी की गईं। किशोर न्याय अधिनियम के प्रावधानों के तहत बाल कल्याण समिति की अनुशंसा एवं जिला प्रशासन के अनुमोदन के बाद बालक को विधिवत पोषण परिवार के सुपुर्द किया गया।

वर्तमान में बालक अपने नए परिवार के साथ सुरक्षित एवं खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहा है। पोषण परिवार द्वारा उसकी दैनिक एवं शैक्षणिक जरूरतों की पूर्ति के साथ उसे स्नेहपूर्ण वातावरण दिया जा रहा है। संस्थागत जीवन से निकलकर पारिवारिक छत्रछाया में नियमित स्कूली शिक्षा प्राप्त कर रहा यह बालक जिले में बाल अधिकारों और वैकल्पिक देखरेख व्यवस्था की सफलता का प्रेरक उदाहरण बन गया है।

आर्थिक सब्बल — कलेक्टर तनुजा सलाम ने प्रदान किए नियुक्ति पत्र, उज्ज्वल भविष्य की दी शुभकामनाएं

नक्सल पुनर्वास नीति के तहत 5 नक्सल पीड़ित परिवारों के सदस्यों को मिली शासकीय सेवा

नई दृष्टिबिंदु / मोहला

नक्सल पुनर्वास नीति के तहत नक्सल पीड़ित परिवारों के पुनर्वास एवं उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने की दिशा में जिला प्रशासन द्वारा महत्वपूर्ण पहल की गई है। इसी क्रम में जिला कार्यालय में आयोजित बैठक के दौरान नक्सल पीड़ित परिवारों के 5 पात्र सदस्यों को नियुक्ति प्रदान की गई। कलेक्टर तनुजा सलाम ने सभी नवनियुक्त कर्मचारियों को नियुक्ति पत्र प्रदान कर शुभकानाएं दी।

नक्सल पीड़ित परिवारों के इन सदस्यों की नियुक्ति आदिवासी विकास विभाग के अंतर्गत संचालित छात्रावास एवं आश्रमों में भृत्य पद पर की गई है। नियुक्ति पत्र प्राप्त करने वालों में रवि दुग्गा, अजय कुमार सलामे, दिलसाय कोरेटी, समीला पूड़ो एवं पायल ईश्वर पूड़ो शामिल हैं।

नक्सल पुनर्वास नीति के अंतर्गत नक्सल हिंसा से प्रभावित परिवारों के पुनर्वास, उनके जीवन में स्थायित्व लाने तथा उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के उद्देश्य से शासन द्वारा विभिन्न कल्याणकारी एवं पुनर्वास संबंधी योजनाएं संचालित की जा रही हैं। इसी दिशा में पात्र नक्सल पीड़ित परिवारों के सदस्यों को शासकीय सेवा का अवसर प्रदान किया गया है। शासकीय सेवा मिलने से इन परिवारों को आर्थिक संबल प्राप्त होने के साथ-साथ उनके जीवन में स्थायित्व और आत्मनिर्भरता का मार्ग प्रशस्त होगा।

इस अवसर पर कलेक्टर तनुजा सलाम ने सभी नवनियुक्त कर्मचारियों को शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि शासकीय सेवा केवल रोजगार का माध्यम नहीं, बल्कि समाज और शासन के प्रति जिम्मेदारी निभाने का अवसर भी है। उन्होंने नवनियुक्त कर्मचारियों से अपने दायित्वों का पूरी निष्ठा, ईमानदारी एवं जिम्मेदारी के साथ निर्वहन करने तथा अपने कार्यस्थल पर अनुशासन एवं समर्पण के साथ कार्य करने को कहा। कलेक्टर सलाम ने कहा कि शासकीय सेवा के माध्यम से नवनियुक्त कर्मचारी अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के साथ-साथ अपने परिवार के बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। उन्होंने सभी को सौंपे गए दायित्वों का गंभीरता से निर्वहन करते हुए शासन की मंशा के अनुरूप कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

उल्लेखनीय है कि नक्सल पीड़ित परिवारों के पात्र सदस्यों को शासकीय सेवा में नियुक्ति मिलना जिला प्रशासन द्वारा पुनर्वास की दिशा में किए जा रहे प्रयासों का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इससे प्रभावित परिवारों को आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त बनाने और उन्हें विकास की मुख्यधारा से जोड़ने में मदद मिलेगी।

ग्राम चेटुवापुरी धाम में दो वर्षों से अधिक अधूरे पुल निर्माण से आवागमन प्रभावित

नई दृष्टिबिंदु / बेमेतरा

संत शिरोमणि गुरु अमर दास तपोभूमि पर हर वर्ष लगता है मेला, यहां बरसात के समय आने-जाने में बहुत ही दिक्कतें हो रही हैं क्योंकि पुल निर्माण कार्य अधूरा पड़ा हुआ है, जानकारी के मुताबिक लोगों की भूमि अधिग्रहण और प्रशासनिक उदासीनता के कारण हजारों ग्रामीण सरल मार्ग की राह देख रहे हैं।

इस पुल, सेतु निर्माण परियोजना की शुरूआत अप्रैल 2022 में हुई थी जिसे 2024 तक पूरा किया जाना था लेकिन अब अगस्त 2026 तक इसे पूरा नहीं किया जा सका है, जिसकी अनुमानित लागत लगभग 22.88 करोड रुपए की थी, यहां देखने वाली बात यह है कि इस पुल निर्माण में लगाया गया छत्तीसगढ़ शासन का बैनर भी नहीं है, या असामाजिक तत्वों द्वारा इसे तोड़ दिया गया है, जिस जगह पर केवल लोहे का फ्रेम बस दिखाई दे रहा है, इस पुल के निर्माण से लोगों को किरतपुर से रायपुर 20 किलोमीटर की दूरी घूम कर आने जाने का फासला कम होगा। यह पुल चेटुवा और किरतपुर के बीच शिवनाथ नदी पर बना है, चेटुवा किरतपुर उच्च स्तरीय पुल के नाम से जाना जाता है, इस पुल की कुल लंबाई 877.50 मीटर है, पुल के निर्माण से 150 गांव के लोगों को होगा फायदा, बारिश की वजह से चेटुवा किरतपुर नदी के शिवनाथ घाट में पहले ही एनीकेट बना है लेकिन बरसात के दिनों में बाढ़ के कारण एनीकट डूब जाता है जिस वजह से लोगों का संपर्क कई गांव से टूट जाता है। अब देखने वाली बात यह है की आने वाले समय में कब तक पुल का निर्माण हो सकेगा।

पुलिस की अनूठी पहल : रक्षाबंधन पर बांधा 'साइबर रक्षा सूत्र'

नई दृष्टिबिंदु / कोण्डागांव

रक्षाबंधन के अवसर पर कोंडागांव पुलिस ने साइबर जागरूकता की अनूठी मिसाल पेश की। "साइबर जागृति अभियान" के तहत थाना पुंगारपाल में 'साइबर सुरक्षा बंधन' और 'साइबर रक्षा सूत्र' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ग्राम पुंगारपाल में आयोजित इस कार्यक्रम में एसपी पंकज चंद्रा (IPS), एएसपी कपिल चंद्रा, डीएसपी नरेन्द्र पुजारी, डीएसपी सिद्धार्थ बघेल, थाना प्रभारी टीआई मणी राजवाड़े, रक्षित निरीक्षक मनीष राजपूत सहित बड़ी संख्या में पुलिस अधिकारी, जनप्रतिनिधि और ग्रामीण शामिल हुए।

कार्यक्रम में ग्रामीणों ने पुलिस जवानों को राखी बांधी तो वहीं महिला पुलिसकर्मियों ने ग्रामीण महिलाओं को 'साइबर रक्षा सूत्र' बांधा। इस दौरान लगभग 600 साइबर रक्षा सूत्र बांधे गए। नक्सलवाद की समाप्ति के बाद क्षेत्र में बने सकारात्मक माहौल में यह आयोजन पुलिस और जनता के बीच बढ़ते विश्वास का प्रतीक बना। पुलिस ने गांव के पटेल, पुजारी और सरपंच को शील्ड देकर सम्मानित किया, वहीं ग्रामीणों ने भी पुलिस स्टाफ को उपहार भेंट किए। बच्चों को चॉकलेट बांटे गए और एसपी पंकज चंद्रा ने बच्चों से आत्मीय संवाद कर उन्हें पढ़ाई के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम में लगभग 500 ग्रामीणों को OTP, UPI PIN और बैंकिंग जानकारी साझा न करने, फर्जी लिंक और कॉल से बचने और ऑनलाइन ठगी से सतर्क रहने की जानकारी दी गई। साइबर जागरूकता दफकोड के साथ सेल्फी भी ली गई। अंत में पुलिस और ग्रामीणों के लिए सामूहिक भोज का आयोजन किया गया।

नगर सेना में नौकरी लगाने का झांसा देकर 6.30 लाख की ठगी, आरोपी गिरफ्तार

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

नगर सेना में नौकरी लगाने का झांसा देकर 6.30 लाख रुपये की धोखाधड़ी करने वाले आरोपी को पुलगांव पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी ने नगर सेना के अधिकारी से अपनी पहचान होने का विश्वास दिलाकर प्रार्थिया के पति को नौकरी लगवाने का भरोसा दिया था। इसके बाद अलग-अलग 15 किस्तों में कुल 6 लाख 30 हजार रुपये प्राप्त किए गए।

पुलिस के अनुसार ग्राम चंदखुरी निवासी किरण चंद्राकर ने थाना पुलगांव में रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि जान-पहचान के आरोपी इसरार खान (44 वर्ष), निवासी ग्राम चंदखुरी, जिला दुर्ग ने नगर सेना के अधिकारी से पहचान होने की बात कहते हुए नौकरी लगवाने का भरोसा दिलाया था। आरोपी ने नौकरी लगवाने के नाम पर प्रार्थिया के पति से अलग-अलग किस्तों में 6.30 लाख रुपये ले लिए। रकम प्राप्त करने के बाद आरोपी ने नौकरी नहीं लगवाई। जब प्रार्थिया ने अपनी रकम वापस मांगी तो आरोपी ने पैसा लौटाने से इंकार कर दिया और गाली-गलौज भी की। शिकायत के आधार पर थाना पुलगांव में अपराध क्रमांक 756/2026, धारा 318(4) बीएनएस के तहत अपराध दर्ज कर विवेचना शुरू की गई। विवेचना के दौरान पुलिस टीम ने आरोपी की पतासाजी कर उसे पकड़ा। पूछताछ में आरोपी द्वारा नौकरी लगाने के नाम पर रकम प्राप्त करना स्वीकार किया गया। इसके बाद पुलिस ने आरोपी को विधिवत गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे न्यायिक रिमाण्ड पर भेज दिया गया।

पुलिस के मुताबिक आरोपी ने नगर सेना के अधिकारी से अपनी पहचान होने का विश्वास दिलाकर नौकरी लगवाने का झांसा दिया। इसी भरोसे में प्रार्थिया के पति से अलग-अलग 15 किस्तों में 6.30 लाख रुपये लिए गए। रकम लेने के बाद नौकरी नहीं लगाई गई और पैसे वापस मांगने पर टालमटोल की गई। इस कार्रवाई में थाना पुलगांव प्रभारी उप निरीक्षक गुरविंदर सिंह संधू, सहायक उप निरीक्षक अश्वनी सिंह, आरक्षक हेमेंद्र कुर्रे सहित थाना स्टाफ की महत्वपूर्ण भूमिका रही। दुर्ग पुलिस ने आम नागरिकों से अपील की है कि किसी भी शासकीय अथवा निजी नौकरी में नियुक्ति दिलाने के नाम पर किसी व्यक्ति को बिना सत्यापन के राशि न दें। नौकरी लगाने का दावा करने वाले व्यक्ति और उसके द्वारा किए जा रहे दावे की संबंधित विभाग से आवश्यक रूप से पुष्टि करें। किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी होने पर तत्काल नजदीकी थाना अथवा पुलिस को सूचना दें।

अमलेश्वर में चोरी के तीन आरोपी गिरफ्तार, सामान जब्त

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

अमलेश्वर थाना पुलिस ने ग्राम सांकरा स्थित फ्लाई ऐश ब्रिक्स प्लांट में हुई चोरी के मामले में तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उनके कब्जे से चोरी का समरसिबल पंप, लोहे के एंगल और घटना में प्रयुक्त मोटर साइकिल बरामद की है।

प्रार्थी लोकेश साहू निवासी हाउसिंग बोर्ड अमलेश्वर ने 27 अगस्त को रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि दोपहर 1 से 2 बजे के बीच अज्ञात चोरों ने सांकरा स्थित फ्लाई ऐश ब्रिक्स प्लांट से समरसिबल पंप, स्टार्टर, केबल और लोहे के एंगल, कीमत करीब 20 हजार रुपये, चोरी कर लिए हैं। रिपोर्ट पर थाना अमलेश्वर में अपराध क्रमांक 105/2026 धारा 303(ए), 331(3) इठर के तहत मामला दर्ज किया गया। विवेचना के दौरान पुलिस ने संदेहियों की पतासाजी कर ग्राम सांकरा निवासी राजकुमार सिंगौर (32), खिलेश्वर उर्फ बोदू सिंगौर (21) और देवेश सिंगौर (18) को 28 अगस्त को गिरफ्तार किया। तीनों को न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है। इस मामले में एक आरोपी अभी फरार है, जिसकी तलाश की जा रही है।

ऑनलाइन क्रिकेट सट्टा : फरार आरोपी 'अंकल' गिरफ्तार, अब तक 13 आरोपी पकड़ाए

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

सिटी कोतवाली पुलिस और एसीसीयू की टीम ने ऑनलाइन क्रिकेट सट्टा मामले में फरार चल रहे एक और आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी का नाम उमेश भगत उर्फ अंकल निवासी प्रगति नगर रिसाली बताया गया है। पुलिस ने उसके पास से घटना में प्रयुक्त मोबाइल फोन जब्त किया है।

यह मामला 22 फरवरी 2026 का है, जब मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने असरफ नगर, तकियापारा स्थित सोहेल अहमद खान के मकान में छापा मारा था। वहां भारत-दक्षिण अफ्रीका क्रिकेट मैच पर ऑनलाइन सट्टा खिलाया जा रहा था। मौके से पुलिस ने लैपटॉप, एलईडी टीवी, 4 मोबाइल, डीवीआर, वाई-फाई उपकरण और 5 हजार नगदी सहित कुल 2.70 लाख की सामग्री जब्त की थी।

इस प्रकरण में अपराध क्रमांक 90/2026, छत्तीसगढ़ जुआ प्रतिषेध अधिनियम 2022 की धारा 4,6,7 और BNS की धारा 112(2) के तहत मामला दर्ज किया गया था। पुलिस इस मामले में सोहेल अहमद खान, संतोष गोंड सहित 12 आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। फरार आरोपी उमेश भगत की लगातार तलाश की जा रही थी, जिसे 27 अगस्त को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेज दिया गया।

आवारा मवेशियों पर निगम की कार्रवाई रायपुर: उच्च न्यायालय के आदेश के परिपालन में छत्तीसगढ़ शासन के नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के दिशा - निर्देश के अनुरूप रायपुर जिला प्रशासन के मार्गनिर्देशन में रायपुर नगर पालिक निगम क्षेत्र के के अंतर्गत सड़क मार्गों में काउकेचर टीम एवं विशेष टीम के श्रमवीरों की सहायता से आवारा मवेशियों की धरपकड़ करने का अभियान प्रतिदिन नियमित रूप से सतत निरंतर जारी है।

जंगल से नक्सल सामग्री और पैंगोलिन की छाल बरामद, सुरक्षाबलों की कार्रवाई

कांकेर। जिले के नक्सल प्रभावित थाना छोटेबेठिया क्षेत्र के ग्राम मोरखण्डी के जंगल-पहाड़ी इलाके में सुरक्षा बलों को बड़ी सफलता मिली है। संयुक्त सर्चिंग अभियान के दौरान नक्सल डम्प से वन्य जीव पैंगोलिन के शल्क (छाल) समेत नक्सली सामग्री बरामद की गई है। बरामद पैंगोलिन शल्क का वजन करीब 3 .5 किलोग्राम बताया गया है। पुलिस अधिकारियों के निर्देशन में जिले में नक्सल उन्मूलन अभियान लगातार चलाया जा रहा है। इसी अभियान के तहत जिला बल, बीएसएफ और बीडीएस टीम ने सीमावर्ती क्षेत्रों में संयुक्त रूप से सर्चिंग अभियान चलाया। इस दौरान ग्राम मोरखण्डी के जंगल-पहाड़ी क्षेत्र में छिपाकर रखे गए नक्सल डम्प का पता चला। सुरक्षा बलों ने मौके से एक स्टील टिफिन बरामद किया, जिसमें वन्य जीव पैंगोलिन का शल्क लगभग 3 .5 किलोग्राम भरा हुआ था। इसके अलावा अन्य नक्सली सामग्री भी जब्त की गई है। बरामद सामग्री को सुरक्षित रूप से थाना छोटेबेठिया लाकर विधिवत कार्रवाई की गई। पैंगोलिन के शल्क मिलने की सूचना वन विभाग को दे दी गई है। मामले में वन विभाग और पुलिस द्वारा आगे की जांच की जा रही है। सुरक्षा बल यह भी पता लगाने में जुटे हैं कि पैंगोलिन शल्क को नक्सलियों ने किस उद्देश्य से रखा था और इसके पीछे किसी तस्करी नेटवर्क की भूमिका तो नहीं है। कांकेर पुलिस ने बताया कि नक्सल प्रभावित और सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा बलों का अभियान लगातार जारी रहेगा।

"यह समाचार पत्र आलोक तिवारी द्वारा 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से आलोक तिवारी की ओर से प्रकाशित की जाती है, जिसका संपादन आलोक तिवारी द्वारा किया जाता है तथा इसका मुद्रण समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 पर किया जाता है। (समाचार चयन के लिए PRP Act, 2023 के तहत संपादक जिम्मेदार है)। समस्त विवादों का निपटारा न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।" संपादक आलोक तिवारी, मो. 74154-69100